चकमक

नवम्बर , 2002

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00

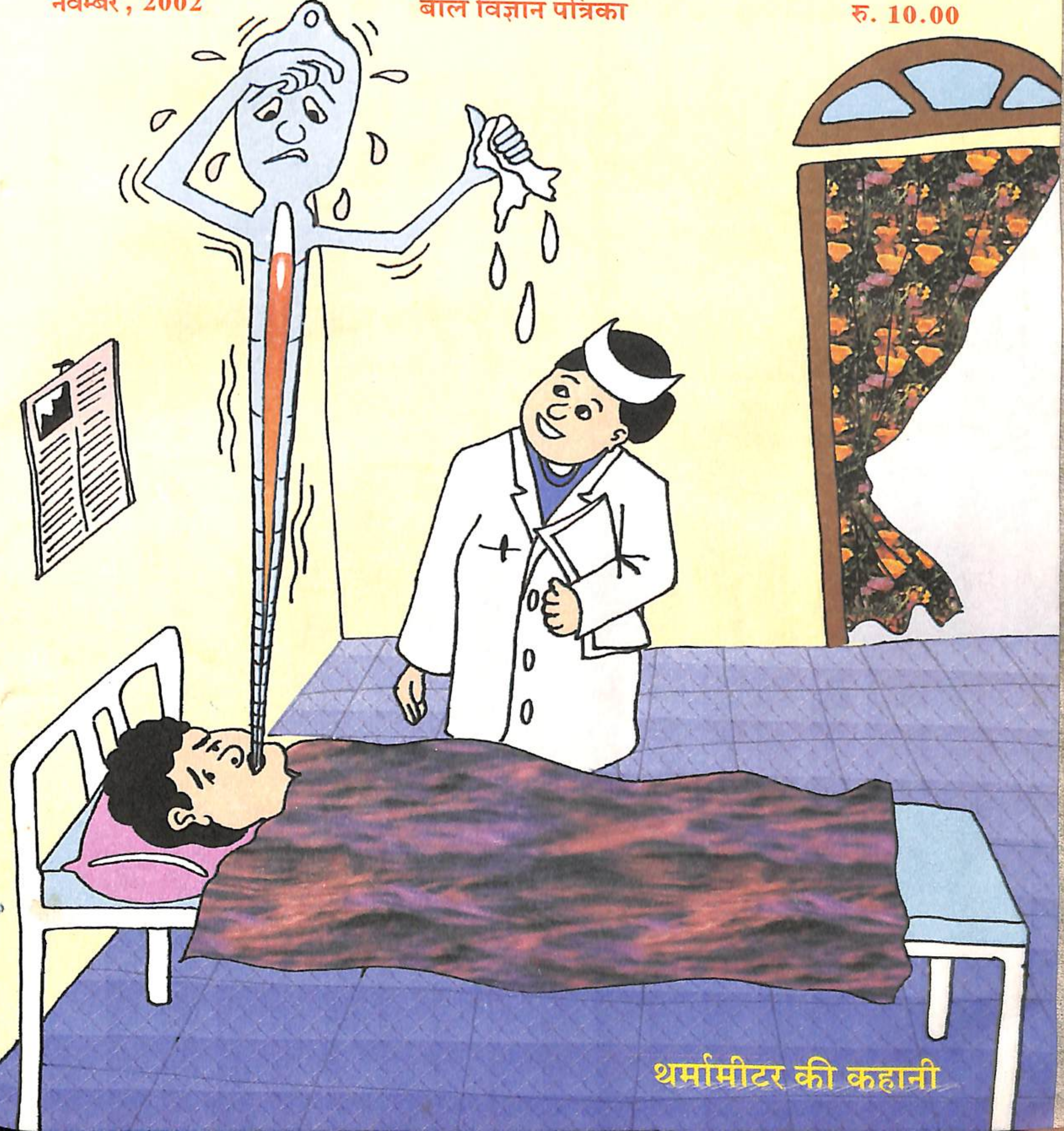

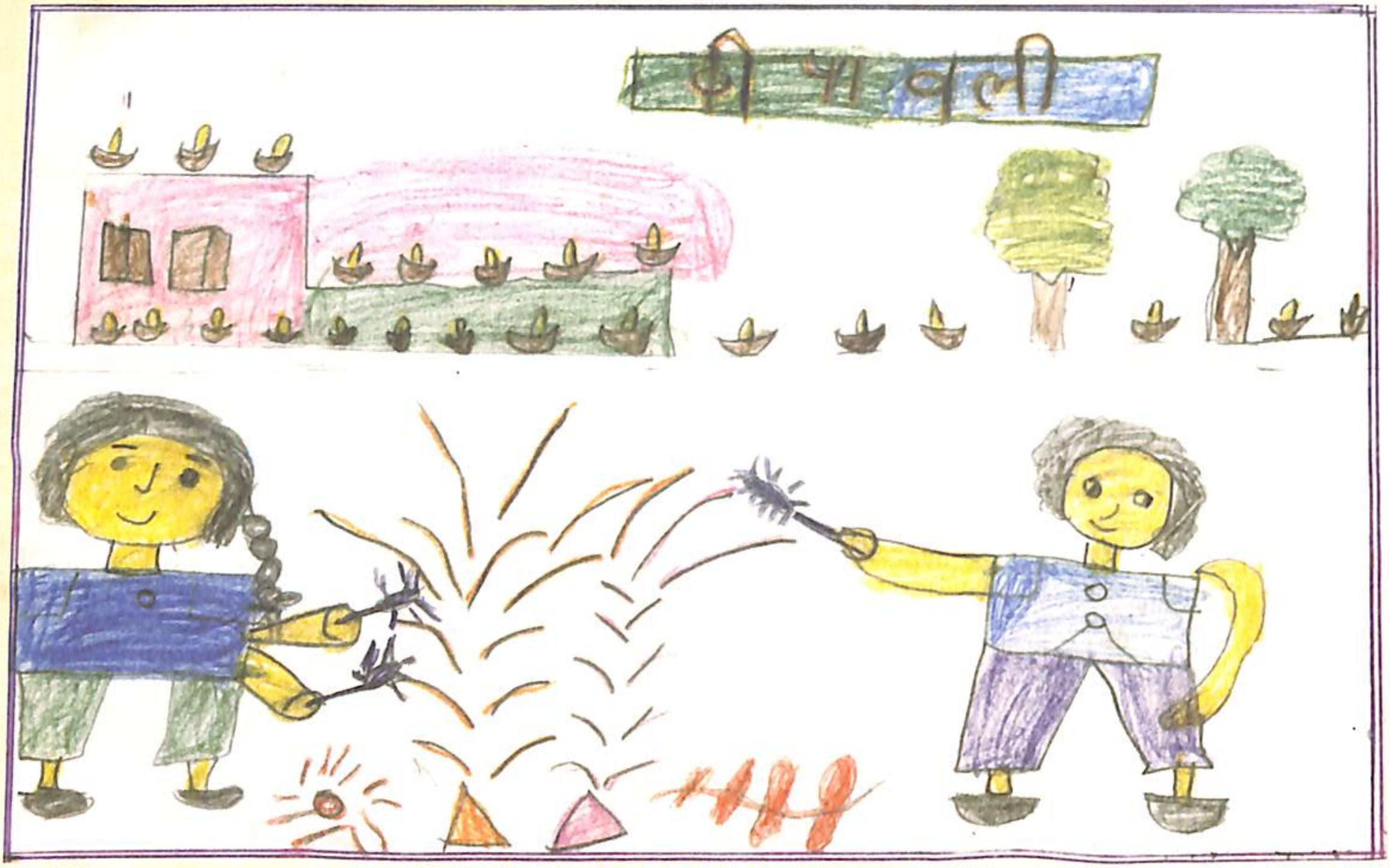

सिमरन जैन, पहली, अजमेर, राजस्थान

शिवशंकर मौर्य, दूसरी, फैज़ाबाद, उ.प्र.

आवरण - आशीष नगरकर एवं राकेश खत्री

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-18 अंक-5 नवम्बर 2002

यह है लम्बू जिराफ। अचानक इनको एक गले में बाँधने की टाई मिल जाती है। कैसी है यह टाई? और जिराफ आखिर इसका करते क्या हैं? पढ़ो कहानी में पेज 24 पर

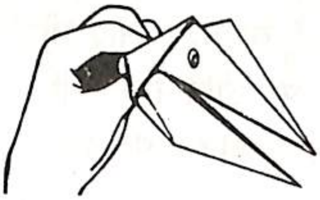

हर बार ढेर सारी चीजें तो तुम बनाते ही हो। इस बार बधाई कार्डों के अलावा बनाओ छिपकली का मुँह भी!

जब बुखार आता है तो हम बड़ी आसानी से थर्मामीटर से बुखार नाप लेते हैं। पर कैसे बना यह थर्मामीटर? क्या है इसके इतिहास की कहानी? इस कहानी की पहली कड़ी पढ़ो पेज 6 पर

कहानी

4 तितली और चना

24 लम्बू की टाई

कविताएँ

3 बेटा, भैया, मामा

23 बस्ता

32 क्यों होता है दंगा ?

खेल-प्रयोग

15 खेल खेल में : बधाई कार्ड बनाओ

18 खेल कागज़ का : छिपकली का मुँह

हर बार की तरह

2 इस बार की बात

9 मेरा पन्ना

38 माथापच्ची

और यह भी

6 थर्मामीटर की कहानी

8 बच्चों के अधिकार: वान्डरसन ओलिवियेरा

16 मेरा परिवार

20 यूँ बनती हैं झीलें

28 चकमक समाचार

30 खेल समाचार

31 चेहरे की मज़ेदार कसरत

34 पुस्तक चर्चा

36 चित्र पहेली

40 चित्र देखो – कहानी लिखो

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

प्रिय दोस्तो,

कैसी लग रही है चकमक!

कुछ चीज़ें तुम्हे पसंद आ रही होंगी, तो कुछ ऐसी भी होंगी जो कम अच्छी लगती हों, या हो सकता है कुछ चीज़ें तुम्हें बिल्कुल ही नापसंद हों।

चकमक को बेहतर बनाने के लिए हमें तुम्हारी राय की ज़रूरत पड़ेगी। इसलिए चकमक को लेकर तुम्हारे मन में जो भी बातें आएँ, ज़रूर बताना। यही इकलौता तरीका है जिससे चकमक को बेहतर बनाया जा सकता है।

पिछले कुछ दिनों से चकमक आर्थिक मुश्किलें भी झेल रही है। अपने मित्रों को चकमक के बारे में बताकर, उन्हें चकमक की सदस्यता के लिए कहकर तुम भी इसकी मदद कर सकते हो।

हाँ एक बात और, इन दिनों न सिर्फ तुम्हारी चिट्ठियाँ, बल्कि रचनाएँ भी हमें कम मिल रही हैं। चित्र तो खूब भेजते हो तुम सब लेकिन कहानी, कविताएँ, आपबीती अब उतना नहीं भेजते। क्या तुम लोगों को यह सब पढ़ने में मज़ा नहीं आता?

इस उम्मीद में कि तुम हमें पत्र लिखोगे, अपनी पसंद-नापसंद बताओगे और रचनाएँ भी भेजोगे!

● चकमक

सम्पादन
विनोद रायना
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

सहयोग
राकेश खत्री

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/453 एच.आई.जी.
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म.प्र.)
फोन : 463380

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

बेटा, भैया, मामा

बोले सहमे से अप्पू जी
"पापा ज़रा बताओ,
क्या तुम दादी के बेटे हो?
साफ साफ समझाओ?"

"हाँ, हाँ वह मेरी माँ हैं"
पापा कहकर मुस्काए
"मैं उनका प्यारा बेटा हूँ"
सुन अप्पू घबराए।

"और बुआ के भी भैया?
दीपा के भी मामा?"
"और नहीं तो क्या?"
सुन उनका खिसका ज़रा पजामा

कोई पापा को,
या पापा अपना कहें किसी को
नहीं गवारा बिल्कुल-बिल्कुल
अपने अप्पूजी को।

डाल गले में बाँह
ठुनककर बोले, चढ़ा पजामा
"पापा! तुम बस मेरे ही हो,
बेटा, भैया, मामा"

● गिरिजा कुलश्रेष्ठ

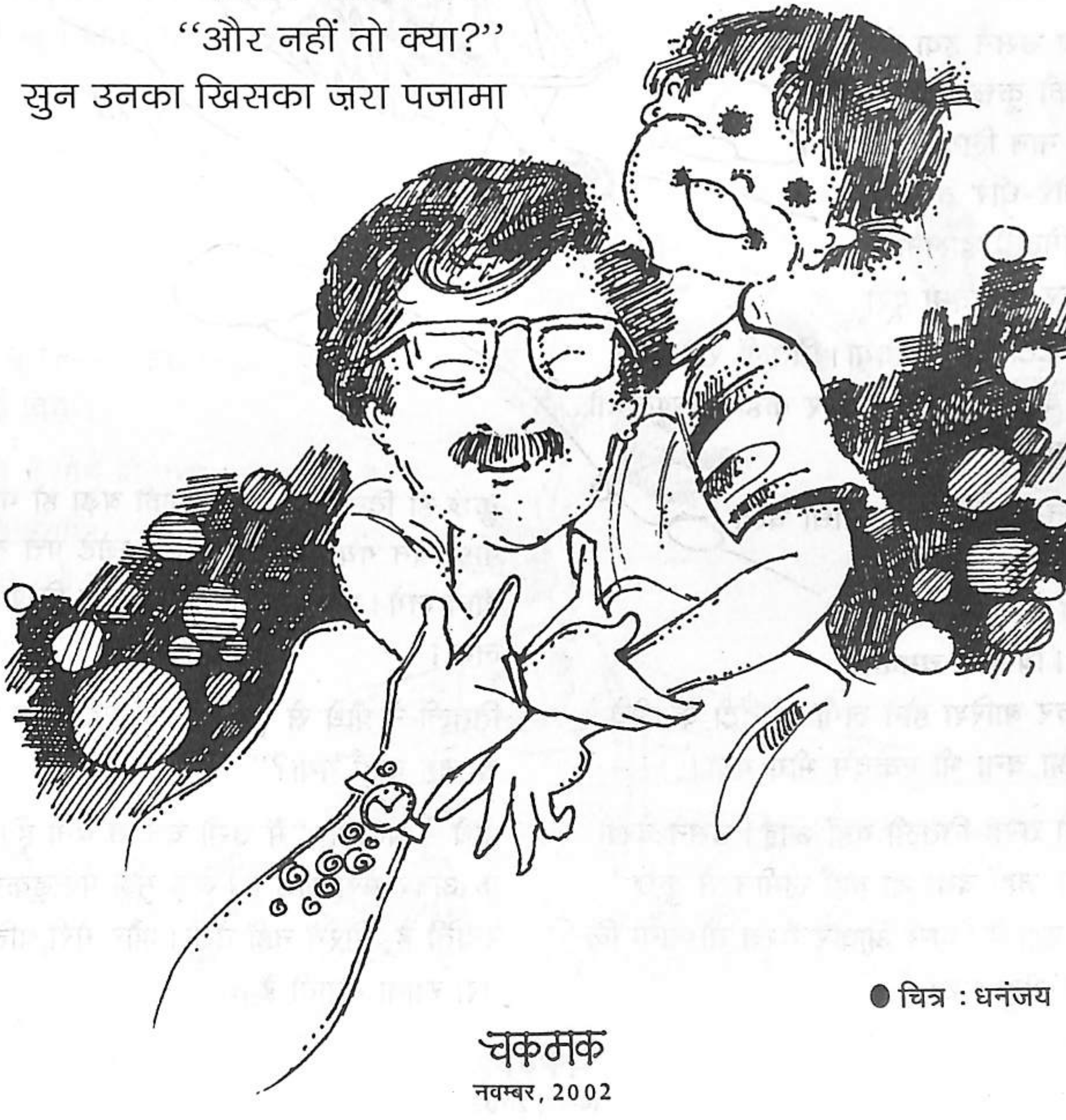

● चित्र : धनंजय

तितली और चना

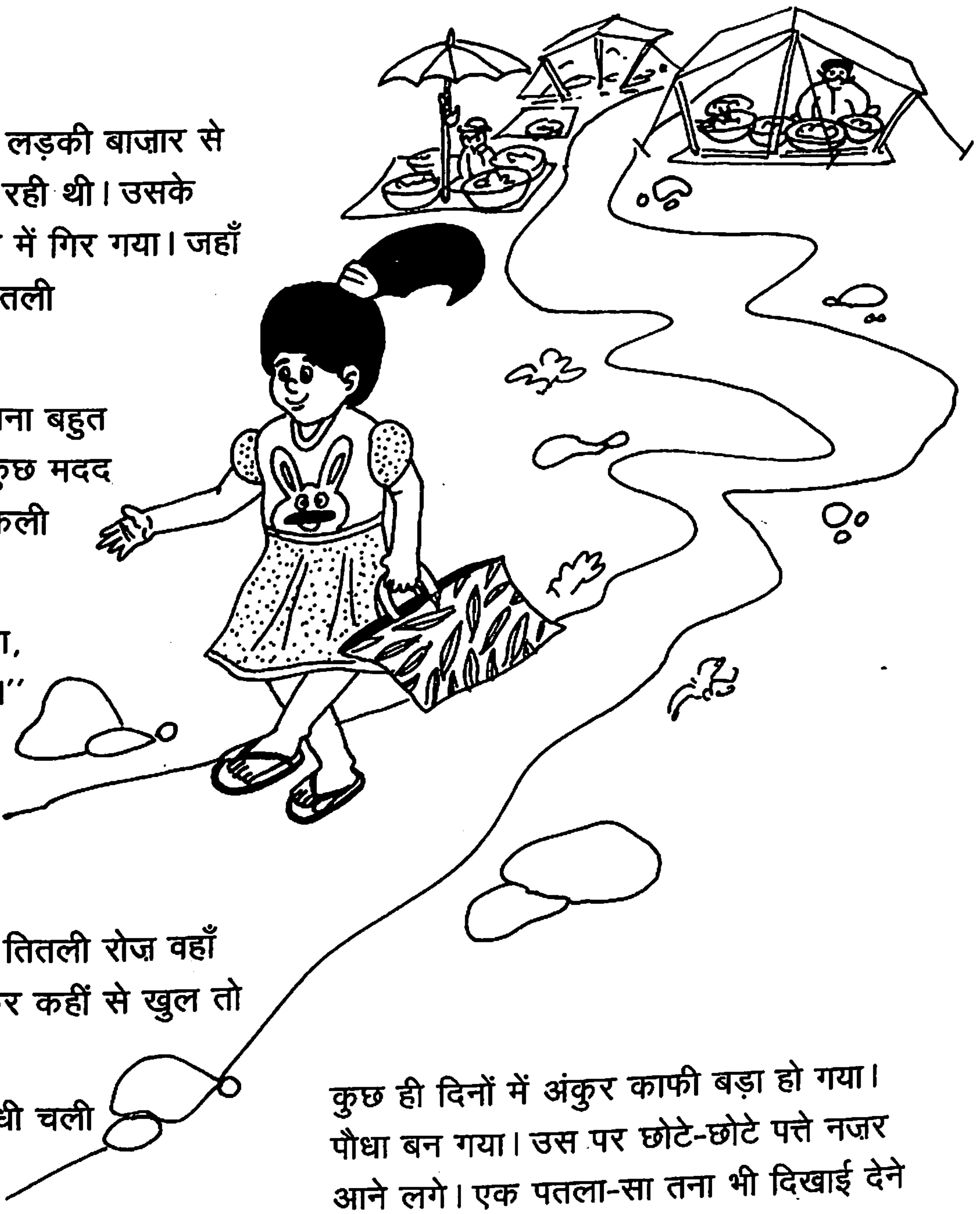

एक दिन की बात है, एक लड़की बाज़ार से चने खरीदकर घर ले जा रही थी। उसके झोले में से एक चना रास्ते में गिर गया। जहाँ वह चना गिरा वहाँ एक तितली रहती थी।

तितली ने देखा, अकेला चना बहुत डर रहा है। उसने सोचा कुछ मदद करनी चाहिए। पर वह अकेली क्या करती?

इसलिए उसने हवा से कहा, "चने की कुछ मदद करो।" हवा ने मान लिया। और धीरे-धीरे चने के ऊपर मिट्टी डालना शुरू कर दी। चना पूरी तरह मिट्टी से ढक गया। तितली रोज़ वहाँ आकर देख लेती, चना फिर कहीं से खुल तो नहीं गया है।

एक दिन खूब ज़ोर से आँधी चली – साँय साँय साँय। आकाश में काले बादल छा गए। बिजली चमकी। और फिर बारिश होने लगी। मिट्टी के नीचे दबा हुआ चना भी एकदम भीग गया।

रोज़ की तरह तितली वहाँ आई। उसने देखा कि चना जहाँ दबा था वहाँ ज़मीन से कुछ निकल रहा है। पास आकर देखा तो पाया कि वह एक अंकुर था।

कुछ ही दिनों में अंकुर काफी बड़ा हो गया। पौधा बन गया। उस पर छोटे-छोटे पत्ते नज़र आने लगे। एक पतला-सा तना भी दिखाई देने लगा।

तितली ने पौधे से पूछा, "यहाँ एक चना गिरा था वह कहाँ गया?"

पौधे ने बताया, "मैं उसी चने से बना हूँ। ज़मीन के अंदर मेरी जड़ है। जड़ मुझे पकड़कर रखती है, गिरने नहीं देती। और मेरी पत्तियाँ मेरा खाना बनाती हैं।

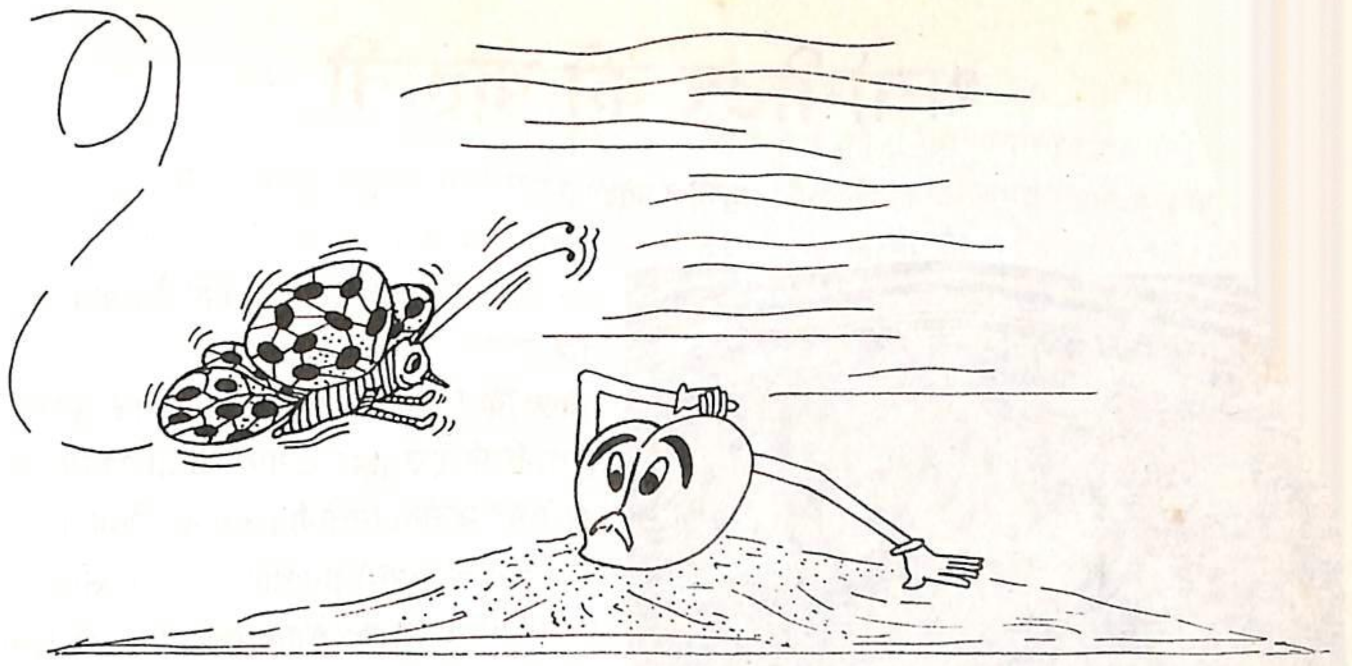

पौधा धीरे-धीरे बढ़ता गया। वह सूरज की धूप और हवा में खुश होता। तितली को उसे देखने में बहुत मज़ा आता।

एक दिन तितली को कुछ नया-नया सा दिखा। पौधे की शाखाओं पर बैंगनी रंग के छोटे-छोटे फूल निकल आए थे। फिर कुछ दिनों बाद उन फूलों की जगह घुँघरू-सा कुछ लटका हुआ दिखाई दिया।

तितली ने पौधे से पूछा, ''यह क्या है?''

पौधे ने बताया, ''हरा-हरा चना है वैसा ही जैसे चने से मैं बना था।''

तितली बहुत खुश हुई कि अब एक और नया चना बन गया है।

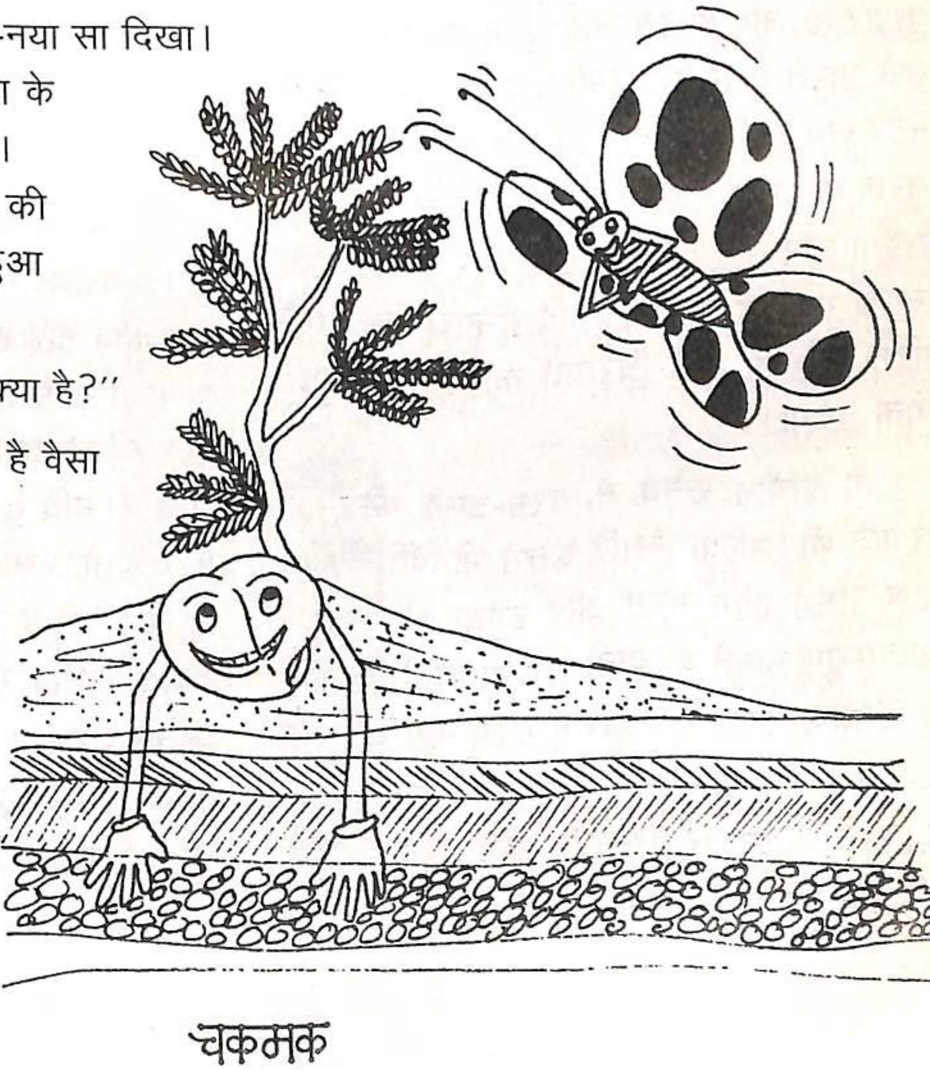

●●●

कहानी : एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत बनी किताब 'खुशी-खुशी' से

चित्र : आशीष नगरकर

थर्मामीटर की कहानी

सुशील जोशी

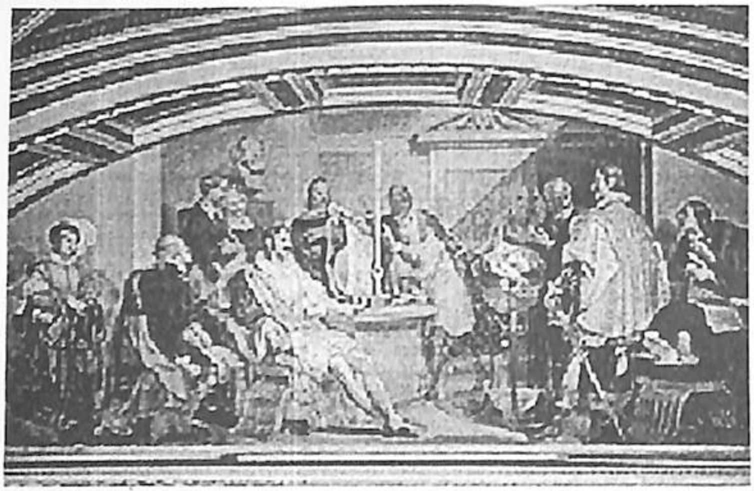

शाही दरबार में थर्मोस्कोप का प्रदर्शन

थर्मामीटर का इतिहास

बुखार हो जाए तो हम कहते हैं टेम्प्रेचर है। और उसे नापते कैसे हैं? थर्मामीटर से, और क्या? मगर जब थर्मामीटर नहीं था, तब क्या करते थे? सरल तरीका यह था – मैं तुम्हारे सिर पर हाथ रखूँगा और देखूँगा कि तुम्हारा सिर मेरे हाथ से ज़्यादा गरम है या नहीं। यदि तुम्हारा सिर मुझे गरम लगा तो तुम्हें चिरायते का कड़वा काढ़ा पीना पड़ेगा।

तो प्राचीन समय में गरम-ठण्डे की यही स्थिति थी। बल्कि स्थिति इससे भी विचित्र थी। उस समय लोग गरम और ठण्डा दो अलग-अलग गुण मानते थे। यानी ऐसा मानते थे कि यदि कोई चीज गरम है तो उसमें गरम नाम का गुण ज़्यादा है और यदि ठण्डी है तो ठण्डा गुण ज़्यादा है। इसी के आधार पर गरम और ठण्डी तासीर की बात होती थी।

इस बात का पता तो काफी देर बाद चला कि गरम और ठण्डा होना एक ही गुण है। जैसा कि मैंने कहा, कोई चीज़ गरम है, इसका पता सिर्फ इस तरह लगाया जाता था कि वह छूने पर कैसी लगती है। अब हर चीज़ को तो हम छू नहीं सकते न। धीरे-धीरे यह समझ में आया कि गरम करने पर कई चीज़ों के गुणों में परिवर्तन आते हैं और ठण्डा करने पर उससे उल्टे परिवर्तन आते हैं। गरमी (ऊष्मा) दी जाए तो चीज़ गरम हो जाती है। दूसरी ओर यदि किसी वस्तु में से ऊष्मा हटाई जाती है तो वह ठण्डी हो जाती है। अर्थात गरम और ठण्डा होना ऊष्मा के प्रवाह से सम्बंधित है।

इस बात को यूँ भी कह सकते हैं कि यदि क और ख दो चीज़ों को एक-दूसरे से सटाकर रखें और वे बराबर गरम हों तो उनमें आपस में ऊष्मा का बहाव नहीं होगा। यदि क अधिक गरम हुई तो क से ख में ऊष्मा बहेगी और यदि ख अधिक गरम हुई तो उल्टा होगा। बुखार देखते समय यही होता है। यदि तुम्हारा माथा मेरे हाथ के बराबर गरम है तो ऊष्मा कहीं नहीं बहती और मुझे कुछ महसूस नहीं होता। मगर यदि तुम्हारा माथा मेरे हाथ से अधिक गरम है तो तुम्हारे माथे की गरमी बहकर मेरे हाथ तक पहुँचेगी और यह बात मुझे महसूस होगी। इसी बात को हम यूँ भी कहते हैं कि तुम्हारे माथे का तापमान मेरे हाथ से अधिक है।

थर्मामीटर से हम इसी तापमान को नापते हैं। तापमान से हमें बस यही पता चलता है कि ऊष्मा के बहाव की दिशा क्या होगी। तापमान से हमें यह नहीं पता चलता कि किसी चीज़ में ऊष्मा है कितनी। जैसे यदि लोहे के दो टुकड़े लिए जाएँ, एक बड़ा और एक छोटा। दोनों का तापमान तो बराबर है, अर्थात यदि इन दोनों को सटाकर रखा जाए तो ऊष्मा कहीं नहीं बहेगी। मगर क्या दोनों में ऊष्मा की मात्रा बराबर है? नहीं, बड़े टुकड़े को छोटे के बराबर तापमान पर लाने के लिए ज़्यादा ऊष्मा चाहिए। तुमने भी देखा होगा कि अगर एक कप चाय बनाने के लिए पानी उबालें तो वह झट उबल जाता है। लेकिन दस कप चाय के लिए पानी उबालने में पानी काफी सारी ऊष्मा सोखने के बाद ही उबलता है।

अब देखें कि तापमान को नापने की क्या जुगत भिड़ाई जा सकती है। इसके लिए हमें चीज़ों के उन गुणों को देखना होगा जो तापमान के साथ बदलते हों। ऐसे कई गुण हैं जो तापमान के साथ बदलते हैं और इनका उपयोग तापमान नापने के लिए हो सकता है और होता भी है। इस तरह की सबसे पहली जुगाड़ गैलीलियो ने की थी।

हाँ, वही गैलीलियो जिसने दूरबीन से बृहस्पति के चाँद देखे थे, पीसा की मीनार से अलग-अलग आकार के गोले गिराए थे और यह बताया था कि पृथ्वी ही सूरज के चक्कर काटती है। उन्होंने पहला थर्मामीटर भी बनाया था। मगर उन्होंने जो थर्मामीटर बनाया था उसे तापमापी के बजाय तापदर्शी (थर्मोस्कोप) कहना बेहतर होगा। मगर इसने आगे कई लोगों को थर्मामीटर बनाने का विचार दिया। गैलीलियो का उपकरण बहुत आसान था। इसमें एक लम्बी सी गर्दन वाला छोटा-सा बल्ब था। यह 1603 ईसवी की बात है। यह बल्ब मुर्गी के अण्डे के बराबर था। और इसकी गर्दन दो बित्ता (लगभग 16 इंच) लम्बी थी। गर्दन बहुत मोटी भी नहीं थी – बस गेहूँ की पुआल बराबर मोटी थी। गैलीलियो बल्ब को अपने दोनों हाथों में दबाकर गरम कर देते और फिर उसे उल्टा करके गर्दन के मुँह को पानी में डुबा देते। जैसे ही वे बल्ब को अपने हाथ की गर्मी देना बन्द करते, थोड़ा पानी गर्दन में चढ़ जाता था। सोचो क्यों?

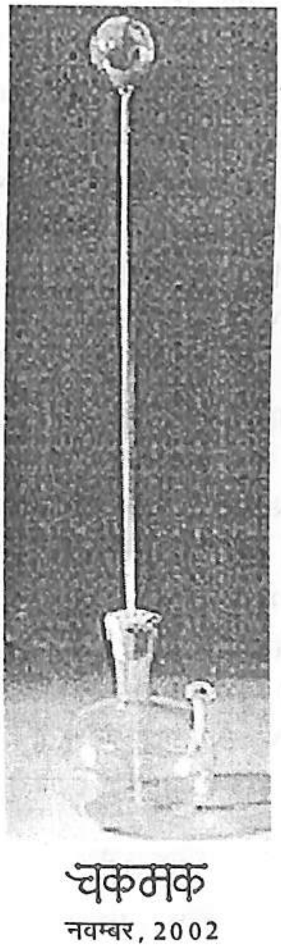

अब उन्होंने गर्दन पर कुछ निशान भी लगा लिए। बल्ब को गरम करने पर नली में किस निशान तक पानी चढ़ा, इससे पता लग जाता कि बल्ब को कितना गरम किया गया था। क्या तुम यह सोच सकते हो कि यदि बल्ब को पहले बर्फ में रखा जाता और फिर गर्दन को पानी में डुबाया जाता तो क्या होता? वास्तव में गैलीलियो के इस सुराहीनुमा तापदर्शी से तापमापी और दाबमापी दोनों का जन्म हुआ है।

अगले अंक में हम पहले तो यह बात करेंगे कि गरम करने के बाद पानी में डुबाने पर गर्दन में पानी क्यों चढ़ता है और फिर देखेंगे कि इसी सिद्धान्त पर अन्य थर्मामीटर कैसे बनाए गए। इस बीच तुम खुद भी इस चित्र को देखकर ऐसा तापदर्शी बनाने का प्रयास कर सकते हो।

बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों का पुरस्कार

चलो इस बार हम वान्डरसन ओलिवियेरा से जान-पहचान करते हैं। वान्डरसन ब्राज़ील के तीसरे नम्बर के बड़े शहर की एक खूब बड़ी बस्ती में रहता है। उसकी उम्र 15 साल है। पर अपनी इस छोटी-सी उम्र में ही वह कई बार सड़कों पर अकेले अपने बूते पर जीने की मुश्किलें झेल चुका है।

पुराने दिनों की बात करते हुए वह कहता है, ''जब हम छोटे थे, तो सोचा करते थे कि जब हम बड़े हो जाएँगे तो सबकुछ ठीक हो जाएगा, सब अच्छा हो जाएगा। बचपन से ही हमें घर के बहुत से काम करने पड़ते थे। पापा के पास नौकरी नहीं थी और वे झुँझलाहट में कई बार माँ को पीटने लगते थे। अगर हम माँ को बचाने जाते तो हमें भी मार पड़ जाती।

कभी-कभी माँ भी हमारी पिटाई करती थी – हमें सही बर्ताव करना सिखाने के लिए, स्कूल भेजने के लिए। ऐसे माहौल में मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता था, मैं स्कूल से भी जी चुराने लगा। फिर एक बार मैं घर छोड़कर भाग गया।''

सड़क के जीवन के बारे में वह बताता है, ''शुरू-शुरू में मुझे डर लगता था। घर की बहुत याद आती थी। सड़क पर प्यार और अपनेपन की कमी बहुत ज़्यादा महसूस होती है। मेरे घरवालों ने मेरी तलाश में अखबार में विज्ञापन भी दिया था। मैं अक्सर गाड़ियाँ धोकर, भीख माँगकर अपनी भूख मिटाता था। पर मैंने कभी चोरी नहीं की। फिर भी पुलिसवाले अक्सर हमारे पीछे पड़ जाते थे। हमें मारते-पीटते थे।

वान्डरसन ओलिवियेरा

मेरा सड़क पर ही जीने वाला एक दोस्त था। उसे नशीली दवाएँ बेचने वाले एक गैंग ने फँसा लिया था। पर मैंने कभी इस काम में शिरकत नहीं की क्योंकि मुझे डर था कि इसमें एक बार फँस जाऊँगा तो कभी इससे बाहर नहीं निकल पाऊँगा। एक बार मेरा यह दोस्त दवाएँ बेचकर मिले पैसे गैंगवालों को नहीं दे पाया। तो उन्होंने उसे मार डाला।

सड़क पर अधिकतर लोग हम जैसे बच्चों को देखकर नाक-भौं सिकोड़ लेते थे। हमें नहाने-धोने को पानी नहीं मिलता, तो हम मैले-कुचैले ही रहते थे। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जो हमसे प्यार से बातें करते। हमें खाना, कपड़े और खिलौने तक दे देते।''

अब वान्डरसन घर पर रहता है। सुबह-सुबह एक सर्कस कम्पनी में कसरत और अभ्यास करने जाता है। फिर स्कूल और फिर दोपहर के बाद एक दफ्तर में नौकरी भी। अब घर के हालात कुछ बेहतर हैं, लेकिन ज़िन्दगी अब भी काफ़ी मुश्किल और मेहनत भरी है। फिर भी अब वह खुश है। उसकी कमाई से घर को मदद मिलती है और उसे और उसके घरवालों को इस बात का गर्व है।

कैसे हुआ यह सब? वान्डरसन बताता है, ''इस बीच एक बार मैं घर लौट आया था पर घर की परेशानियाँ वैसी की वैसी थीं। मैं फिर भाग गया, सड़कों पर जीने। इस तरह मैं लगभग डेढ़ साल तक सड़कों पर रहा। तब मेरी माँ ने हमारे शहर की सरकार की मदद से मुझे ढूँढ निकाला। उन्होंने मेरा परिचय सड़क पर जीने वाले बच्चों के लिए काम करने वाली एक संस्था से कराया। उन लोगों के सम्पर्क में आने के बाद मैं फिर स्कूल जाने लगा। साथ ही मैं 'सबका सर्कस' नामक सर्कस कम्पनी में ट्रेनिंग लेने लगा। यह सर्कस सड़क पर जीने वाले बच्चों को सामान्य जीवन में वापस लाने के लिए ही बनी है।

अब तो मैं कई खेल भी दिखाता हूँ। मेरा सबसे प्रिय खेल है आग के गोले में से गुलाटी खाना। मैं ऊँची रस्सी पर चलना, एक पहिए की साइकिल चलाना आदि भी कर लेता हूँ। अक्सर जब हम कोई शो करते हैं तो लोग हमारी बहुत तारीफ करते हैं। उन्हें इस बात से बहुत ताज्जुब होता है कि सड़क पर जीने वाले बच्चे झगड़ने के अलावा भी कुछ कर सकते हैं!''

वान्डरसन बच्चों के अधिकारों के लिए दुनिया के बच्चों के पुरस्कार वाले जजों में सड़क पर जीने वाले बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है। उसे सर्कस के कलाकार का जीवन बहुत पसन्द है। और इस पुरस्कार के लिए जज होना, अपने जैसे दूसरे बच्चों से मिलना भी।

मेरा पन्ना

कब होगी वह नई सुबह?

हाथों में बंदूक और लिए कट्टा
निकले हैं लेने बदला।
कौन दोषी कौन निर्दोष
सब में भरा हुआ आक्रोश।

अच्छे बुरे की खत्म हो गई सोच
माथे का सिंदूर दिया पोंछ,
कलाइयों की राखी दी नोच
भाई-भाई में छिड़ी है लड़ाई।
बेचारे निर्दोषों ने है सज़ा पाई।

रक्त पिपासू बन बैठे सब।
न जाने यह सृष्टि खत्म हो जाए कब।
झेल रहे हैं कितने लोग कष्ट
हमारी आवाज़ें उठेंगी कब?
जब सृष्टि हो जाएगी नष्ट?

क्या कभी नहीं उठेगी हमारी आवाज़ें?
और यूँ ही गुम हो जाएँगी बेगुनाहों की फरियादें?
इस हिंसा के घेरे में,
क्या हमेशा रहेगा न्याय अंधेरे में?

कब होगी वह नई सुबह?
जिसे देखने के लिए तरस रही हैं आँखें
कब मिलेगा इंसाफ वह,
जो लाएगा मुस्कान हर चेहरे पर?

यूँ ही बहती जा रही हैं खून की नदियाँ,
बीती जा रही हैं सदियाँ
रोकना होगा इस हिंसा को,
जातिवाद को, भेदभाव को।

रोकना होगा इस हिंसा को,
मिलजुलकर हम सब को।
आओ मिलकर कदम उठाएँ,
और एक नई सुबह लाएँ।

● श्रुति चौबे, नौवीं, इलाहाबाद, उ.प्र.

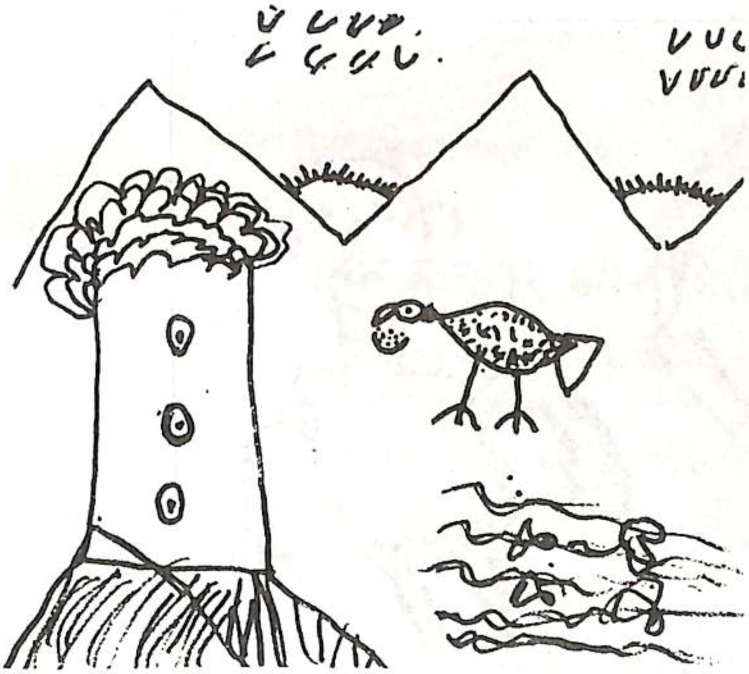

● शबनम, चौथी, बड़ौदा, गुजरात

चूहे का पिंजरा

एक बार की बात है, हमारे घर में बहुत चूहे हो गए थे। जब हम सोते थे तो वे खटर–पटर की आवाज़ें करके हमें डरा देते थे। फिर हमने सोचा कि कुछ भी करके चूहों को पकड़ना चाहिए। मेरे पापा एक पिंजरा लाए और बोले, ''इस पिंजरे में रोटी अटकाएँगे। और फिर चूहा आएगा, रोटी खाएगा और पकड़ा जाएगा।''

हमने पिंजरा रख दिया। मेरी दादी इसमें रोज़ ताज़ी रोटी अटकातीं थी। उस पिंजरे में दो चूहे पकड़े गए। उसके बाद मेरी दादी और मम्मी रोज़ रोटी अटकाती, पर मज़े की बात यह हो गई कि चूहा आता, रोटी खाता और भाग जाता। शायद उसे पता चल गया था कि पिंजरा उसे पकड़ने के लिए रखा है। और शायद चूहे अब समझदार हो गए थे। आज तक हमारा पिंजरा चूहा आने की प्रतीक्षा में मुँह खोले बैठा है।

● अश्लेषा सरवटे, चौथी, इंदौर, म. प्र.

मेरा स्कूल

मेरा स्कूल, मेरा स्कूल
जैसे कोई गुलाब का फूल
जो बिगड़े बच्चे मेरे स्कूल में पढ़े
सीधे हो गए सारे बच्चे जो थे अकड़े
मेरी अध्यापिका सिखाती प्यार का पाठ हमें
कहती भारत में मिलकर ही रहना है हमें तुम्हें
गीत गाओ प्यार का
जितना पानी सागर का
वह नहीं करती भेदभाव हम में
तो क्यों करें हम भी भेद आपस में

● सुबुही ज़मा, नूर महल, भोपाल, म. प्र.

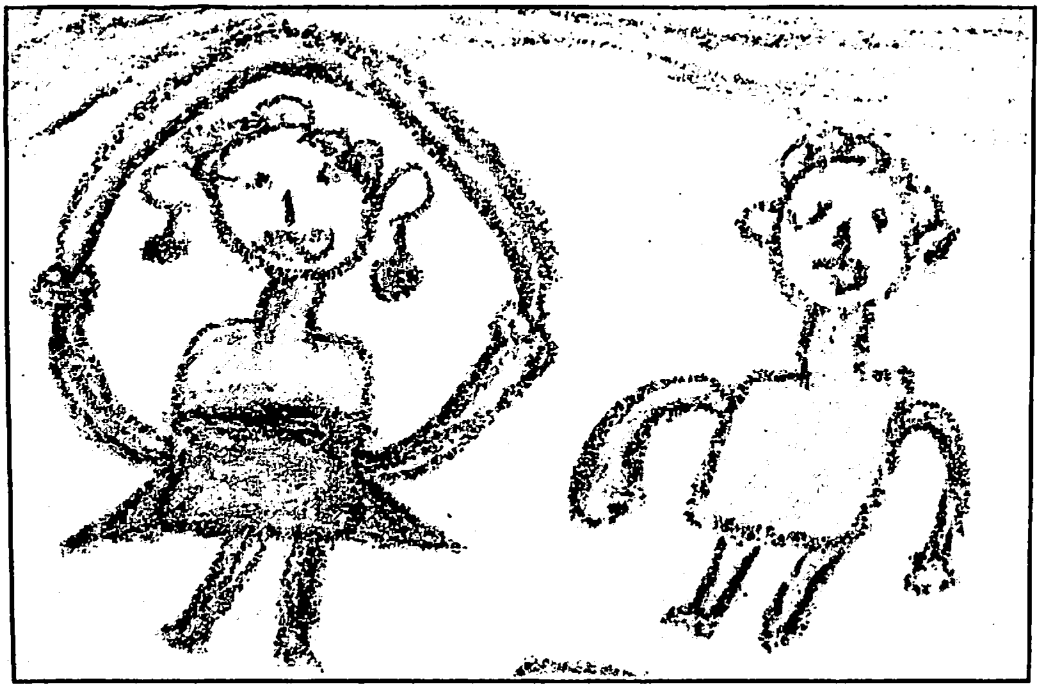

● रुकसाना, सातवीं, धार, म. प्र.

200 वें अंक में से बनाई गई कहानियाँ

कछुआ और खरगोश

एक कछुआ इधर-उधर घूमते-घूमते दूसरे जंगल में जा पहुँचा। उसे इसकी खबर नहीं थी कि वह कहाँ आ पहुँचा है। अचानक उसे एक खरगोश दिखाई दिया। वह गहरी नींद में था। अचानक उसे लगा उसने खरगोश को जगाया और उसे अपनी आपबीती सुनाई। खरगोश बहुत ही अच्छे स्वभाव का था। उसने कछुए से उसके घर का पता पूछा। कछुए ने अपने घर का पता बताया। खरगोश ने तुरंत उसे कहा कि मैं तुम्हारे आगे-आगे चलता हूँ तुम मेरे पीछे आओ। कछुआ खरगोश के पीछे गया और वह अपने जंगल में पहुँच गया। कछुए ने खरगोश को धन्यवाद दिया। खरगोश वापस अपने जंगल चला गया।

● रीता सिंह, सातवीं, देवास, म. प्र.

● महेन्द्र कर्मा, छठवीं, धार, म. प्र.

मेरा प्यारा खरगोश

जब मैं गर्मी की छुट्टियों में मेरे गाँव गई तो वहाँ पर मुझे एक खरगोश मिला। वह दर्द से कराह रहा था क्योंकि उसे काँटे चुभ गए थे। उसे खून निकल रहा था, मुझसे यह देखा न गया। मैंने उसे प्यार से उठाया और घर ले आई। मैंने मरहम-पट्टी कर उसे मेरे साथ पलंग पर बिठा लिया। दो-तीन दिन में वह ठीक हो गया। तब तक वह मुझसे काफी घुल-मिल गया। अब हम एक-दूसरे के साथ खेलते, खाना खाते, सोते यहाँ तक कि हम एक दूसरे के बिना बैठते भी नहीं थे। लेकिन जब मेरी गर्मियों की छुट्टियाँ पूरी हुईं तो मैंने उसे मेरी सहेली के पास छोड़ दिया। फिर मैं वापस देवास आ गई। जब मैं एक साल बाद फिर वहाँ गई तो मेरी सहेली से दो महीनों के लिए ले लिया। वह मुझे दो-तीन दिन में पहचान गया। लेकिन इस बार वह बीमार हो गया। और फिर मर गया। मैं बहुत दुखी हुई। मुझे अब भी वह खरगोश बहुत याद आता है।

● अनीता चौधरी, छठवीं, देवास, म. प्र.

एक कबूतर और तोते की कहानी

एक कबूतर था। उसका एक घर था। और उसका एक छोटा भाई भी था। वह एक दिन कहीं बाहर घूमने के लिए गया। थोड़ी दूर ही गया था कि अचानक तेजी से बिजली चमकी और फिर अचानक बादल गरजने लगे। और फिर तेज़ी से बारिश होने लगी। फिर बारिश कुछ ज़्यादा तेज हो गई तो कबूतर घबराने लगा कि अब मैं घर कैसे जाऊँगा। औंर यहाँ पर तो कोई जगह भी नहीं है कि मैं रुक जाऊँ। यहाँ पर तो सिर्फ रोड ही है। और मेरा छोटा भाई पता नहीं कैसा होगा? मैं जल्दी से उड़कर घर भी नहीं जा सकता। वह मन ही मन सोचने लगा कि जल्दी बारिश रुक जाए तो मैं अपने घर चला जाऊँ। फिर थोड़ी देर में बारिश रुक गई और वह अपने घर चला गया।

● वंदना वर्मा, छठवीं, देवास, म. प्र.

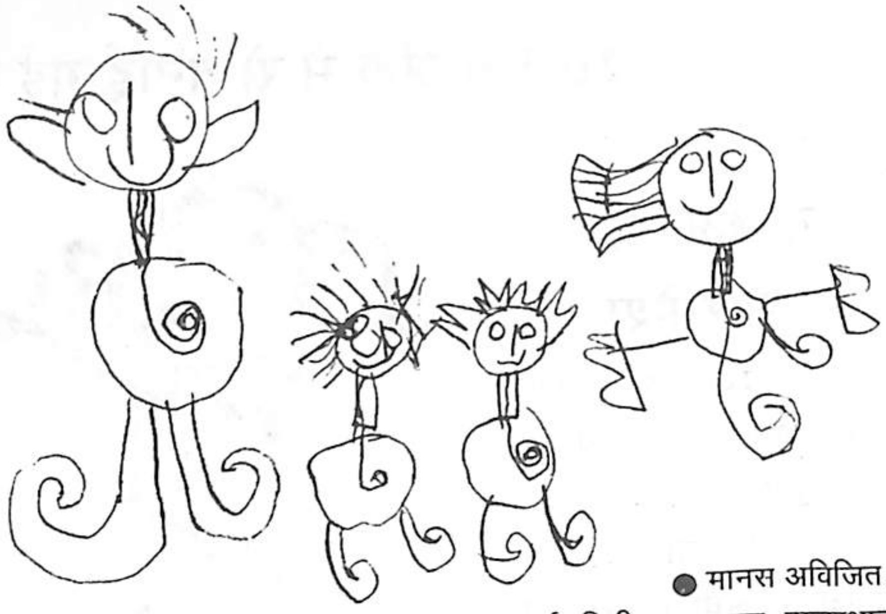

● मानस अविजित,
साढ़े चार वर्ष, झिरी, झालावाड़, राजस्थान

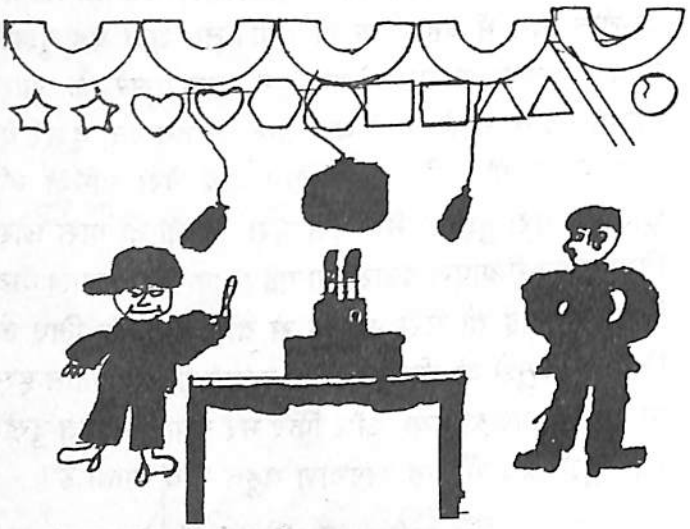

● सोनित शर्मा, छठवीं, देवली, देवास, म. प्र.

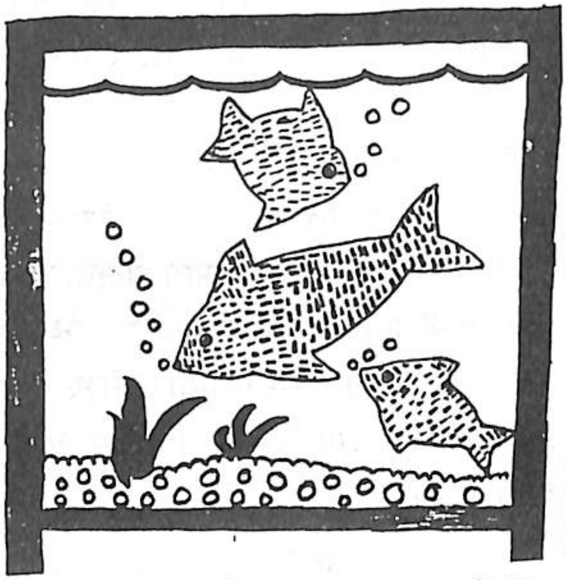

● सुनंदा राजपूत, पाँचवीं,
पिपरिया, होशंगाबाद, म. प्र.

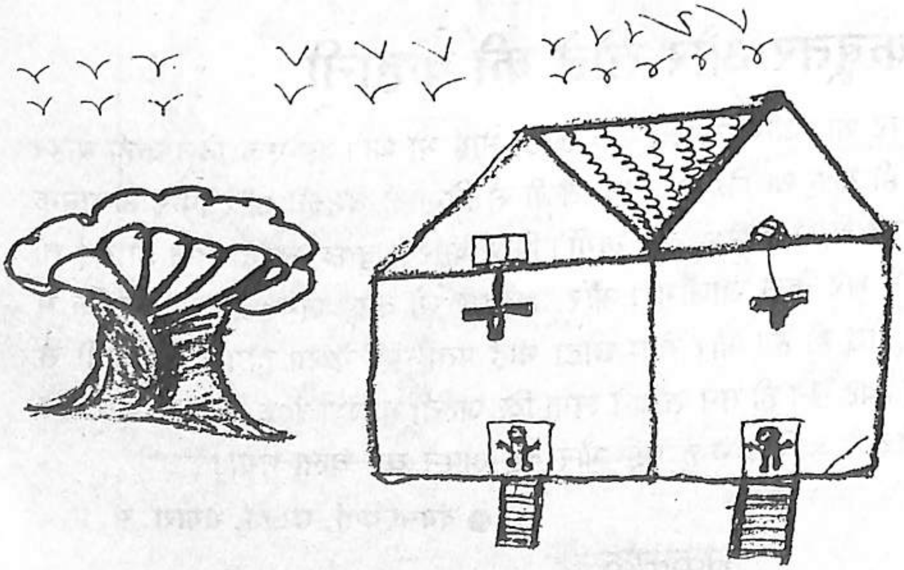

●दिवान फहमिदा आबिदशाह,
छठवीं, बड़ौदा, गुजरात

उड़ जा रे चिट्ठी

उड़ जा रे चिट्ठी बादल पास
हमको लगी बहुत प्यास
थोड़ा-सा तू पानी पिला दे,
कर कर तू बरसात
सारी धरती जल रही है
जल रहा है संसार
कर दे तू बरसात
कर दे तू बरसात
पानी पीकर ही लेंगे साँस
ताकि रहे जीवित ये संसार
जब वर्षा आए झूम-झूमकर
बच्चे नाचें घूम-घूमकर
संदेशा लेकर जल्दी आ
बैठे हैं इंतज़ार में
यूँ हमको न तरसा
उड़ जा रे चिट्ठी बादल पास।

● पाँचवीं कक्षा के समस्त बच्चे
एस. डी. एम. स्कूल सतरोद कालन,
हिसार, हरियाणा

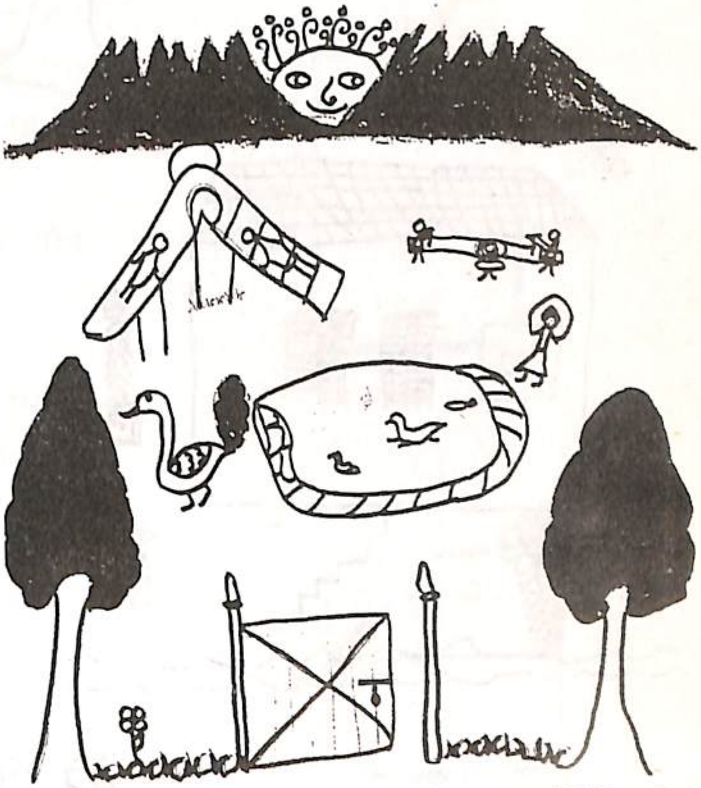

● ज्योति (पता नहीं लिखा)

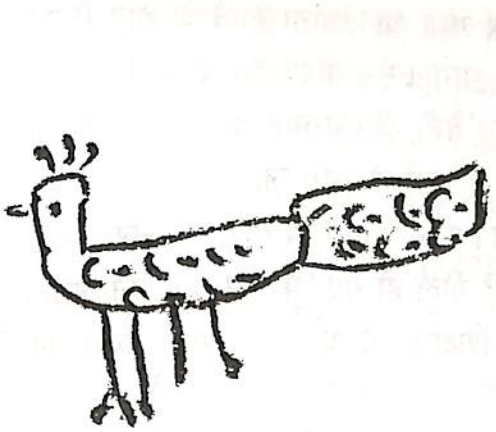

● नगमा, बड़ोदा, गुजरात

पता याद रखें

जब मैं छोटी थी तब मैं और मेरी छोटी बहन मेरे पिताजी के साथ सब्जी मंडी गए। वहाँ-इतनी भीड़ थी कि मेरा हाथ मेरे पिताजी के हाथ से छूट गया। मैं सब्जी मंडी में खो गई। पर मैंने हिम्मत नहीं हारी। मैं तुरंत सब्जी मंडी से बाहर निकली और पिताजी की स्कूटर पर जा बैठ गई यह सोचकर कि पिताजी स्कूटर लेने आएँगे और मुझे देख लेंगे। बहुत देर हो गई किंतु पिताजी सब्जी मंडी से बाहर नहीं आए। मैंने सोचा कि हो सकता है कि वे मुझे सब्जी मंडी के अंदर ही ढूँढ रहे हों। काफी देर हो जाने के बाद मैं स्कूटर से नीचे उतरी और एक आदमी को अपने घर का पता बताया और उनके साथ घर पहुँची। मैंने सोचा मुझे अपने घर का पता याद था, यह अच्छा हुआ।

● सुबुही ज़मा, नूर महल, भोपाल, म. प्र.

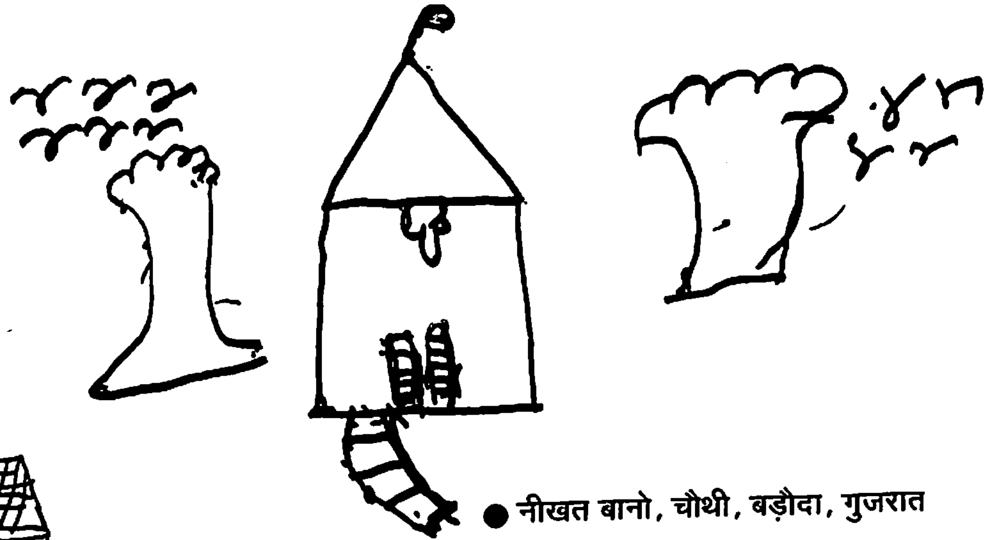

● नीखत बानो, चौथी, बड़ौदा, गुजरात

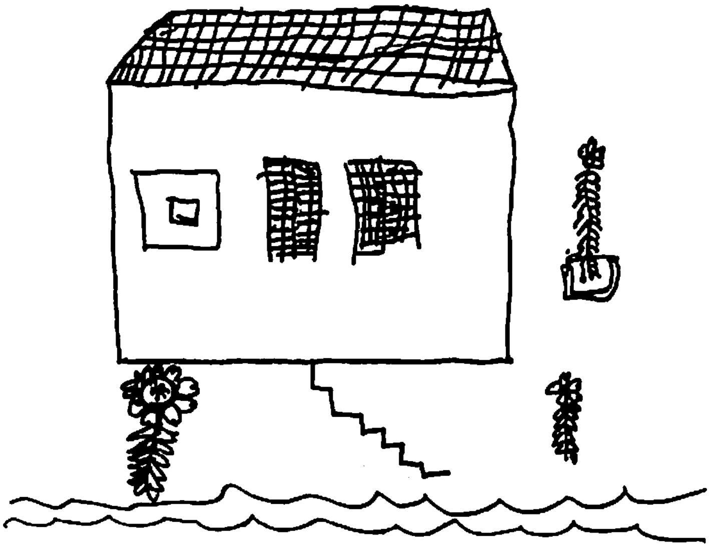

● आफरीन बानो, बड़ौदा, गुजरात

मेरे शिक्षक

जब मैं कक्षा पहली में पढ़ता था तो हमारे विद्यालय में दो अध्यापिकाएँ आती थीं। मुझे शाला में बहुत डर लगता था। कभी-कभी मैं शाला से निकलकर घर आ जाता था। कक्षा के छात्र दो दलों में बँटे थे। एक कमरे में कक्षा तीन से पाँचवीं तक के छात्र पढ़ते थे। दूसरे कमरे में पहली व दूसरी के छात्र थे। दोनों अध्यापिकाएँ खूब लड़ती थीं। गाँव के कुछ लोग उन्हें छुड़ाते थे। गुस्से में वे हमारे ऊपर बरस पड़ती थीं। मन में आया तो किसी को खड़ा करके चाँटा मार देती थीं। इससे कुछ बच्चे डर के मारे स्कूल नहीं आते।

एक बार आधी छुट्टी का समय हो गया। मैं खाना खाने घर गया था। खाना खाने के बाद मैं सो गया। उठा तो समय हो गया। मैं झटपट उठकर स्कूल की ओर भागा। मेरे कक्षा का दरवाज़ा अन्दर से बंद था। मैंने उसे धक्का दिया। परन्तु वहाँ मैडम कुर्सी लगाकर बैठी थीं। उन्होंने दरवाज़ा तो खोला पर मुझे अन्दर नहीं आने दिया। कहा, पूरी छुट्टी होने वाली है तू यहाँ से भाग जा।

मैं नहीं गया तो मुझे मुर्गा बनाकर मेरे ऊपर पत्थर रख दिया। और कहा यदि तू हिला और पत्थर गिरा तो मैं तुझे डण्डे से मारूँगी। मैं डर गया। पसीने से मेरे कपड़े गीले हो गए। पैरों में दर्द होने लगा। बाद में मुझे बिठा दिया गया। बाद में हमारे स्कूल में कुछ अच्छे शिक्षक भी आए। जो कभी बच्चों को नहीं मारते थे।

● महेन्द्र कुमार वैष्णव, मकरेड़ा, अजमेर, राजस्थान

बधाई कार्ड बनाओ

अपने दोस्तों को जन्मदिन या किसी और तरह की बधाई देने के लिए तुम कार्ड तो बनाते होगे। एक मज़ेदार कार्ड बनाने का तरीका यहाँ बता रहे हैं।

कार्ड बनाने के लिए हल्के रंग की मोटी कार्डशीट, पेंसिल, स्केल, कैंची, स्कैचपेन, गोंद जुगाड़ लो।

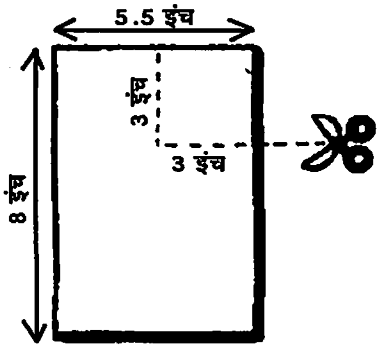

- कार्डशीट में से कार्ड बनाने के लिए लगभग 8 इंच चौड़ा और 11 इंच लम्बा टुकड़ा काट लो।
- इस कार्डशीट के टुकड़े को लम्बाई में बीच से मोड़ लो।
- इस मुड़े हुए कागज़ को खुली हुई तरफ से लगभग 3 इंच लम्बा-चौड़ा टुकड़ा काटकर अलग कर दो।

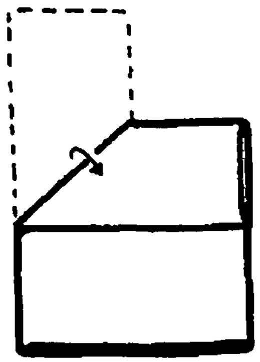

- ऊपर के बचे हुए हिस्से को दाईं तरफ ले जाते हुए मोड़ो, फिर मोड़ खोल लो।
- अब कार्ड को पूरा खोल लो। ऊपर बचा हुआ जो हिस्सा अभी मोड़कर खोला था उसके निशान दिखेंगे। उन्हीं निशानों पर से ऊपर वाले हिस्से को अन्दर की तरफ दबाते हुए मोड़ लो।

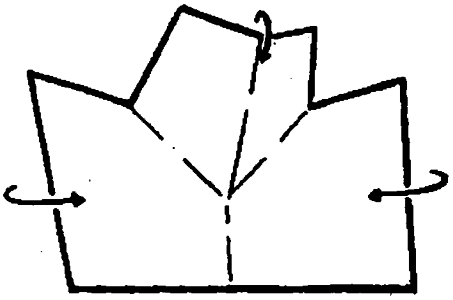

- अब जब भी कार्ड को खोलोगे तो ऊपर का हिस्सा खुलकर उठ जाएगा। और, जब कार्ड बंद करोगे तो वह हिस्सा अन्दर बंद हो जाएगा।
- अब इसे अपने मन से सजा लो। ऊपर के खुलने-बंद होने वाले हिस्से को कैंची से गोल आकार दे दो।
- इस हिस्से पर रंगीन पेन से कोई मुखड़ा बना लो। संदेश लिखो और भेज दो अपने दोस्त को।

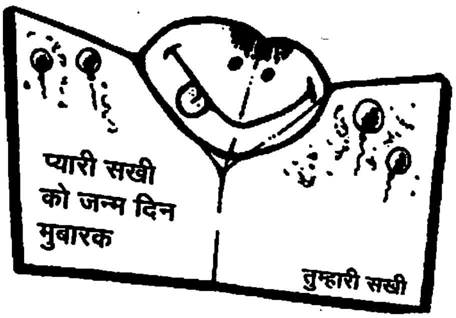

शोभा घारे एक चित्रकार हैं। उनके चित्रों में प्रकृति के दृश्य ज़रूर दिखाई देते हैं। चकमक के लिए वे काफी समय से चित्र बना रही हैं। हमारा अक्सर उनके घर जाना होता है। हमने अक्सर उनके घर में विभिन्न पशु-पक्षियों को देखा है। शोभा ने अपने इस परिवार के कई किस्से भी हमें सुनाए। हमने सोचा क्यों न ये किस्से चकमक के ज़रिए तुम को भी सुनाएँ। हमने शोभा से कहा तो वे तैयार हो गईं। तुम भी इन्हें पढ़ो।

हमारा बहादुर डैनी

प्रकृति के प्रति समर्पित मराठा परिवार में मेरा जन्म मध्यप्रदेश के गुना नामक जगह में हुआ। उस समय मेरे पिताजी थल सेना में थे। पशु पक्षियों व पेड़ -पौधों को हमारे घर में पारिवारिक सदस्यों के रूप में मान्यता दी जाती रही है। पिताजी श्री एस.एस. साटम महाराष्ट्र राज्य के हरे भरे रत्नागिरी (कोंकण) ज़िले के व माताजी श्रीमती शालिनी राणे गोवा से हैं। हम तीन बहनें व दो भाई हैं। वे सभी इन दिनों मुम्बई में रहते हैं। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा ग्वालियर व भोपाल में हुई।

ग्वालियर की एक घटना है, एक बार हम लोग सपरिवार घूमने के लिए शहर से दूर एक झील पर गए। इस झील (टीगरा जलाशय) से ग्वालियर शहर को पीने का पानी मिलता है। जब हम उस झील की चारदीवारी पर चल रहे थे तब अचानक एक मेंढक उछला। उसे देखते ही हमारा झबरे बालों वाला कुत्ता डैनी छपाक से पानी में कूद पड़ा। मेंढक तो उसे नहीं मिला लेकिन वह पानी में ऊपर-नीचे होने लगा। हम सभी के होश उड़ गए कि अब इसे बाहर कैसे निकालेंगे। वह ठीक हमारे साथ-साथ नीचे पानी में बड़ी कठिनाई से तैर रहा था और हम लोग लगातार उसका नाम पुकारते जा रहे थे और उसे उत्साहित कर रहे थे। 'बस अब थोड़ी दूर और चलना है, बस अब तो आ ही गए।' वगैरह-वगैरह।

वहाँ का चौकीदार भी हमारे साथ चल रहा था और डैनी के तैरने की प्रशंसा कर रहा था। देखने में वह बिल्कुल रीछ जैसा था लेकिन उसका रंग काला-भूरा था। लम्बे बालों के कारण उसे तैरने में बहुत परेशानी हो रही थी। मैं तो मन ही मन भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि 'भगवान इसे बचा लो। चाहे मेरी जान ले लो।' और सचमुच वह किनारे पर पहुँच ही गया।

जैसे ही वह बाहर निकला मेरी माँ ने उसे कपड़े से पोंछा और उसे चाय पिलाई और हम सब खुशी से उछल-उछलकर कह रहे थे, 'वाह! डैनी कितना बहादुर है।'

पॉपी चला गया

एक बार हमारे घर के जामुन के पेड़ पर गिलहरी का घर था। बड़े-बड़े और भी बहुत से पेड़ लगे थे। पेड़ों पर गिलहरियाँ उछलकूद करती रहतीं। उन्हें देखकर कुत्ते भी इनके पीछे भागते, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाने के लिए गिलहरियाँ नीचे उतरकर दौड़ लगाया करती थीं।

एक दिन रॉकी नाम के कुत्ते ने एक छोटे गिलहरी के बच्चे को दबोच लिया। माँ ने देखकर शोर मचाया। हम सब भी बाहर भागे और वह बच्चा उसकी पकड़ से छूट गया। हम लोगों ने उसे उठाया, वह जख्मी हो गया था और बहुत घबरा गया था। उसकी पूँछ में घाव था। हम लोगों का पशु चिकित्सालय से बहुत वास्ता पड़ता था। सभी कम्पाउण्डर, डॉक्टर परिचित हो गए थे। गिलहरी

को हम पॉपी कहकर पुकारने लगे थे। हम पॉपी को अस्पताल ले गए। वहाँ डॉक्टरों ने उसकी पूँछ काट दी, आठ-दस दिन की मरहम पट्टी के बाद वह ठीक हो गई। अब उसकी पूँछ छोटी हो गई थी, जिसका हम सबको बहुत दुख हुआ था। अब तो पॉपी हमारा पारिवारिक सदस्य हो चुका था, वह हमारी बात समझने लगा था, हमारे साथ खूब खेलता रहता। दीपक व राजेश ने उसे बॉक्सिंग करना भी सिखाया। वह दो पैरों (पिछली टाँगों) पर खड़ा होकर अपने हाथों को मुट्ठी की तरह कसकर मनुष्यों की तरह बॉक्सिंग करता था।

पॉपी, अपने माता पिता, भाई-बहन सबको पहचानता था और दिन में उन्हीं लोगों के साथ पेड़ों पर उछल-कूद करता रहता व शाम को घर आ जाता। आसपास के दूसरे पेड़ों पर और भी गिलहरियों के परिवार रहते थे। कुछ महीनों में पॉपी भी बड़ा हो गया था और शायद उसने अपना साथी तलाश लिया था क्योंकि उसने दरवाज़े के पर्दे पर अपना घर बनाना शुरू किया था – धागे, पंख, कपड़े की कतरनें आदि से सुन्दर घोंसलेनुमा घर बना लिया।

एक दिन अचानक पॉपी गायब हो गया। शाम के बाद रात हो गई। लेकिन पॉपी घर नहीं लौटा। हमें लगा शायद अपने भाई-बहनों के साथ रुक गया होगा। दूसरे दिन उसके परिवार के सब सदस्य तो थे लेकिन पॉपी नहीं था। हमने उसे बहुत ढूँढा। दूसरे बड़े पेड़ों के पास जाकर बहुत आवाजें दीं, वो होता तो ज़रूर आता।

अब तो केवल उसकी यादें बाकी रह गई थीं। मेरी आई (माँ) तो जब कौए आकर बैठते तो उनसे भी पूछा करतीं, ''क्यों रे, कहीं तू तो नहीं ले गया पॉपी को? और उसके जवाब में कौए भी काँव-काँव कर शायद कहते – नहीं नहीं नहीं।

चित्र : शोभा घारे

छिपकली का मुँह

तुमने घर में छिपकली देखी होगी। जब छिपकली किसी कीड़े को खाती है तो कैसे मुँह चलाती है, यह भी देखा होगा। न देखा हो तो अब देखना। चलो पहले छिपकली का मुँह बना लेते हैं। फिर जब असली छिपकली को देखो तो तुम भी अपनी छिपकली का मुँह चलाना।

- सबसे पहले कागज़ को वर्गाकार कर लो।
- इस वर्गाकार कागज़ को कर्ण रेखा पर से मोड़ना है। यानी आमने-सामने के दो कोनों को मिलाते हुए मोड़ो। (चित्र-1) मोड़ अँगूठे से दबाकर पक्का कर लो। फिर मोड़ को वापस खोल लो।
- अब वर्गाकार कागज़ में मोड़ का एक निशान बन गया। अब चित्र-2 के अनुसार दो किनारों को बीच तक लाकर टूटी रेखा पर से मोड़ लो।
- चित्र-3 की तरह।
- अब ऊपर की तरफ के दो किनारों को भी बीच तक लाकर मोड़ लो।
- चित्र-4 देखो कैसे मोड़ना है।
- मोड़ने के बाद चित्र-5 की तरह की आकृति बनेगी।

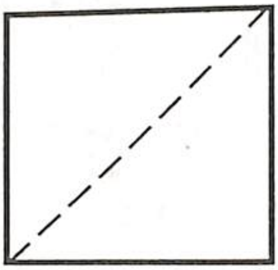
चित्र-1

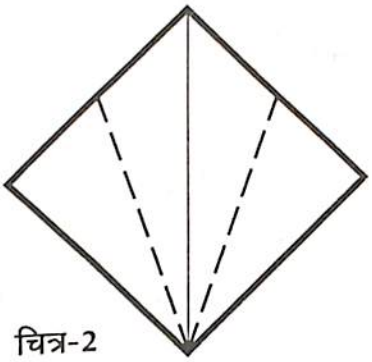
चित्र-2

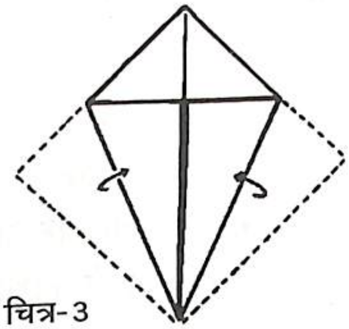
चित्र-3

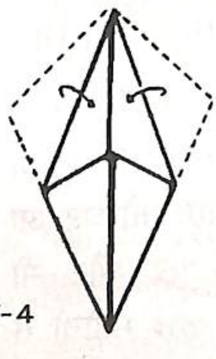
चित्र-4

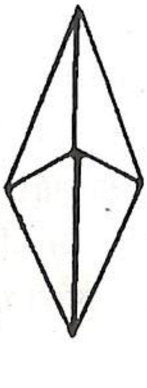
चित्र-5

- अब इस आकृति को बीच से मोड़ते हुए नीचे के आधे हिस्से को ऊपर लाओ। (चित्र-6)
- अब इस आकृति को लम्बाई में बीच से मोड़ लो। मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।
- फिर चित्र–7 में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से मोड़ो।
- चित्र–8 देखो। आकृति में बने छोटे तिकोनों को आकृति की दो सतहों के बीच में अंदर की ओर दबाकर मोड़ दो।
- चित्र–9 जैसी आकृति बनेगी। इसकी बाईं ओर की ऊपरी परत को दाईं ओर ले जाओ।
- बस हो गया। चित्र–10 देखो किस तरह आकृति को पकड़ा है। इसी तरह उँगलियों से तुम भी इसे पकड़कर चलाने की कोशिश करो।

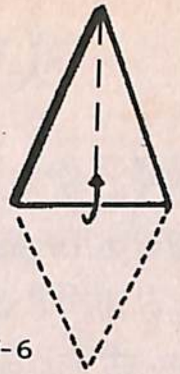
चित्र-6

चित्र-7

चित्र-8

चित्र-9

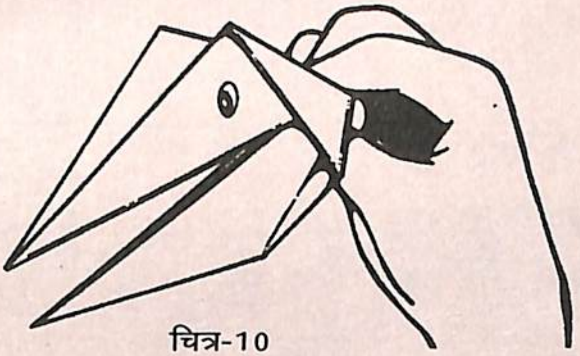
चित्र-10

माथापच्ची अक्टूबर, 2002 के हल

1. अंक और उनकी उल्टी आकृतियों को मिलाकर ये आकृतियाँ बनी हैं। अब तो तुम समझ ही गए होगे कि अधूरी आकृति 6 की है।
5. * की जगह 8 आएगा।
6. 5/6
7. 1 मिनिट प्रति किलोमीटर
8. काँच के टुकड़े बाहर की ओर न गिरते, अगर पत्थर बाहर से मारे जाते।

अक्टूबर 2002 में छपी चित्र पहेली का हल

दि	मा	ग		दं	त	मं	ज	न
या						दि		वा
स	म	झ		ड	का	र		ब
ला		ड़		ब				
ई		प	ह	ल	वा	न		ह
				रो		म		व
जु		क	प	टी		क	म	ल
का		ता						दा
म	ग	र	म	च्छ		अं	गू	र

यूँ बनती हैं झीलें

झील क्या होती है? झील ज़मीन के ऐसे बड़े से गड्ढे को कहते हैं जिसमें पानी भरा होता है। कई झीलें काफी बड़ी होती हैं तो कुछ छोटी। कुछ गहरी होती हैं तो कुछ उथली। जानते हो दुनिया की सबसे बड़ी झील कौन-सी है? कैस्पियन झील या कैस्पियन सागर! इसका क्षेत्रफल है 3,93,898 वर्ग किलोमीटर। और पूर्वी साइबेरिया की बैकाल झील दुनिया की सबसे गहरी झील है। यह 1940 मीटर गहरी है।

झीलें कैसे बनती होंगी?

झीलों के बनने के कई कारण हो सकते हैं। धरती की हलचलें मसलन भूकम्प या ज्वालामुखी आदि, धरती का कटाव, बाढ़ आदि। चलो झीलें बनने के कुछ कारणों पर बातें करते हैं।

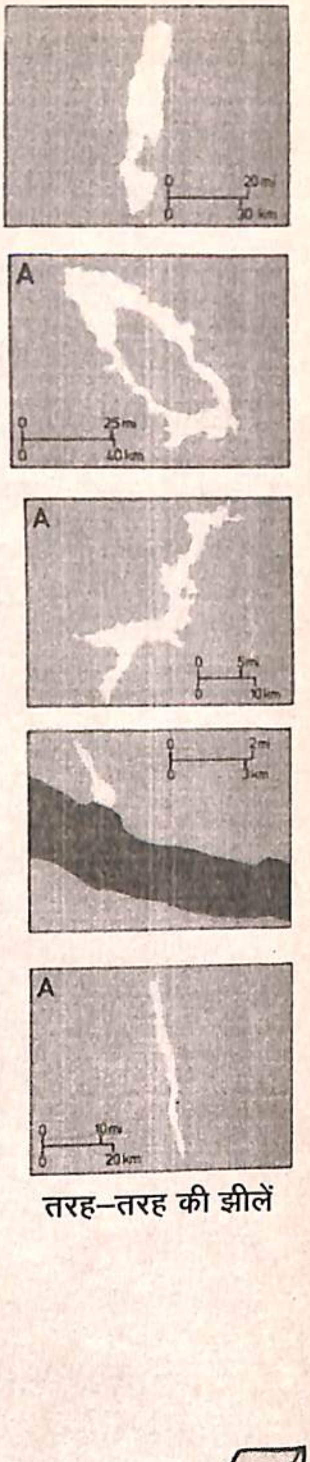

तरह–तरह की झीलें

(1) धरती की हलचल

शुरुआत अगर धरती की हलचलों से करें तो! कालासागर से भूमि की एक परत के उठाव के कारण पानी फिर से काला सागर में नहीं जा पाया और इस तरह कैस्पियन झील बनी।

कभी-कभी हिमनदियों या पहाड़ी नदियों का रास्ता बर्फ की चट्टानों (ग्लेशियर) द्वारा लाए गए कचरे के कारण रुक जाता है। इससे भी झीलें पैदा होती हैं। सुपीरियर झील इसी तरह से बनी है। सुपीरियर झील उत्तरी अमेरिका में प्रेयरी प्रदेश में है।

लम्बी और ऊँची घाटियों के बीच किसी भी तरह रुकावट आ जाती है तो ये लम्बी गहरी झीलों में बदल जाती हैं। मलावी के अलावा अफ्रीका की श्वेत नदी घाटी में ऐसी झीलें पाई जाती हैं।

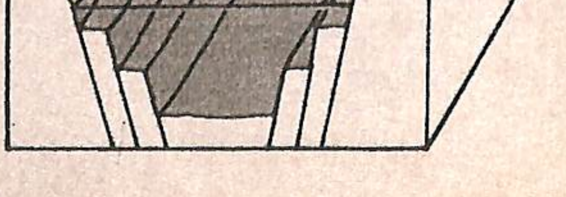

(2) ज्वालामुखीय कारक

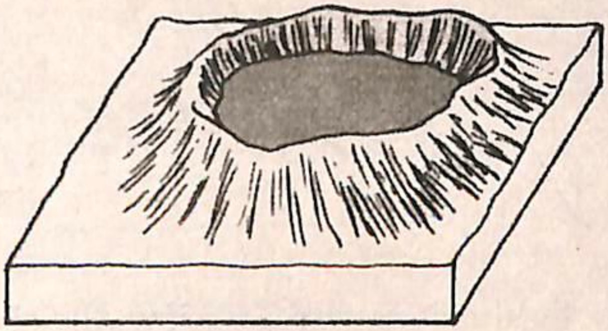

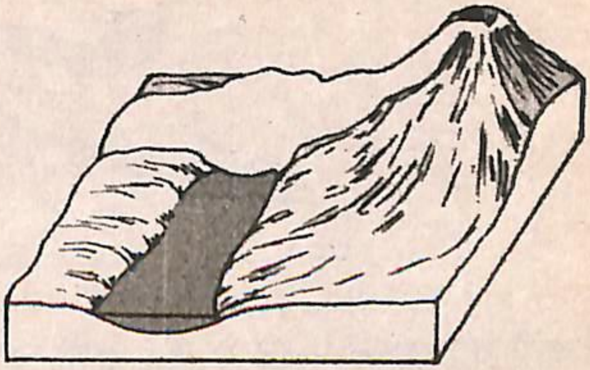

ज्वालामुखी के शांत होने पर उसके मुँह में वर्षा का पानी भर जाता है। इस तरह जो झीलें बन जाती हैं इन्हें क्रेटर झीलें कहते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में ओरेगॉन राज्य की क्रेटर झील इसी तरह की झील है। कभी-कभी ज्वालामुखी का लावा पास की किसी नदी में पहुँचता है और नदी की धारा को रोक देता है। तब भी झीलें बन जाती हैं। दक्षिण मध्यवर्ती फ्रांस की गेलिली सागर और अमेरिका की निकारागुआ झील ऐसी ही झीलें हैं।

(3) अपरदन या कटाव से

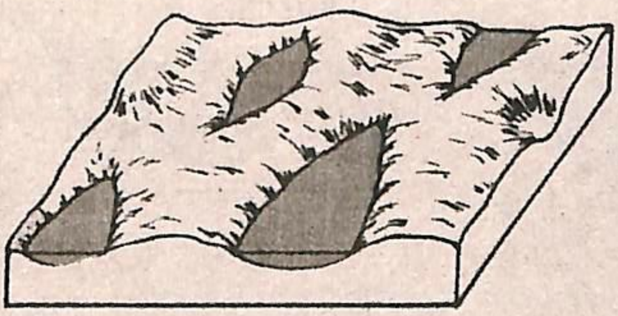

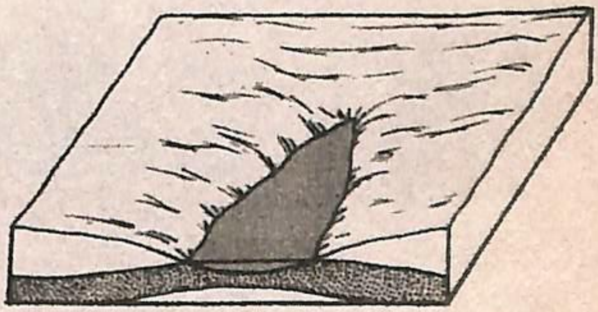

जब नदियाँ अपने रास्ते की घुलनशील चट्टानों को काट देती हैं तो बड़े-बड़े गड्ढे बन जाते हैं। जब इनमें पानी भर जाता है तो झीलें बन जाती हैं। आयरलैण्ड की शेनन नदी के इस तरह के व्यवहार से लीने और डर्ग झीलें बनी हैं। सूखे प्रदेशों में तेज़ हवा से भी बड़े-बड़े कटाव होते हैं, इनके द्वारा बने गड्ढे भी झील बन जाते हैं।

(4) भूस्खलन या चट्टानों के खिसकने से

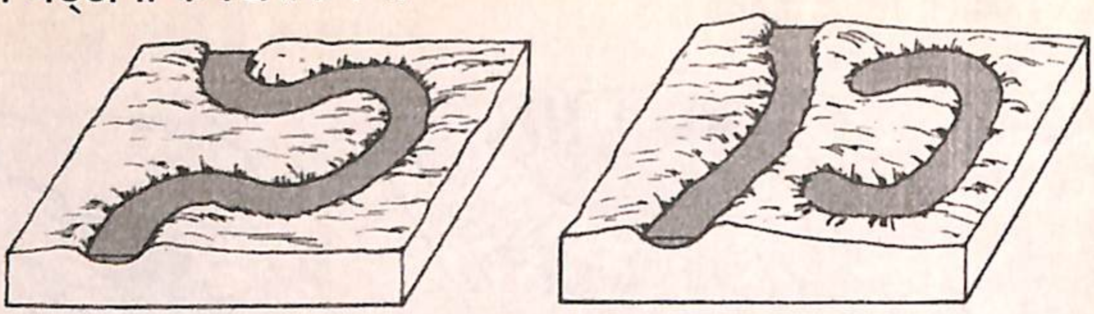

चट्टानों की उलट-पुलट में जब कभी नदी का पानी रुक जाता है तो ऐसी झीलें बन जाती हैं। मोन्टाना की भूकम्प झील इसी का उदाहरण है। कभी-कभी हिमनदियों और बर्फ की पर्तों को बर्फ की कोई बड़ी चट्टान नदी से अलग कर देती है। जैसे आक्स-बो झील एक नदी को उसके मुड़ाव पर अवरुद्ध करने से बनी है।

डेल्टा प्रदेश में नदियों का रास्ता बड़ा टेढ़ा-मेढ़ा होता है। मिट्टी के खिसकने से हर कभी धारा रुक जाती है। इस कारण नदी को नया रास्ता ढूँढना पड़ता है। ऐसे में नदी की धारा जहाँ रुक गई थी वहाँ झील बन जाती है। मिसीसिपी की पांचास्ट्रियन झील इसी का उदाहरण है। इस तरह की झीलें तटीय भागों में होती हैं।

(5) क्षरण और जमाव से

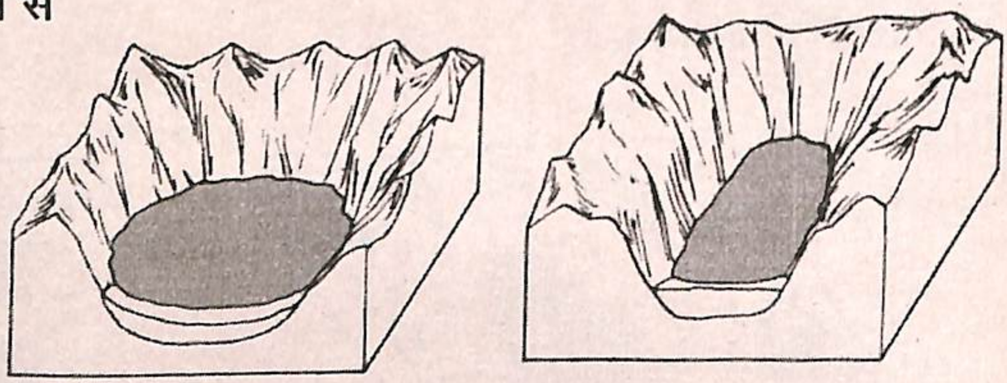

हिमनदियों में कटाव और जमाव से अनगिनत झीलें बनती हैं। इस जमाव या कटाव का मुख्य ज़िम्मेदार बर्फ की चट्टानों द्वारा जमा किया कचरा होता है। घुमावदार पहाड़ियों में ऐसी रुकावटों से छोटी पहाड़ी झील बनती हैं।

हिमघाटियों के मुँह पर जब कचरा रुकावट पैदा करता है तो सँकरी किन्तु लम्बी झीलें बनती हैं। न्यू यॉर्क की फिंगर झील, इंग्लैण्ड की डिस्ट्रिक्ट झील, स्वीडन की ग्लिन्ट लाइन झील और इटली की कोमी, गार्दा तथा मेगोइर इसी तरह की झीलें हैं।

चित्र एवं सामग्री द केम्ब्रिज गाइड टु द अर्थ से साभार। अनुवाद : सुशील शुक्ल

बस्ता

सारा घर भर हँसता।
इतना हल्का बस्ता॥
के जी वन में पढ़ते।
थी के जी ले चढ़ते॥
कैसे कटता रस्ता।
करता हालत खस्ता॥
हम सब चुप हैं सहते।
शिक्षक जी हैं कहते॥
अपना बोझा ढोना।
क्यों हो रोना धोना॥
यह मज़बूत बनाता।
श्रम से जुड़ता नाता॥

● राष्ट्रबंधु
● चित्र : मनोज कुलकर्णी

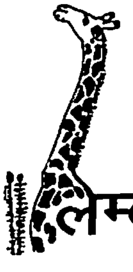

लम्बू की टाई

राधा एच. एस.

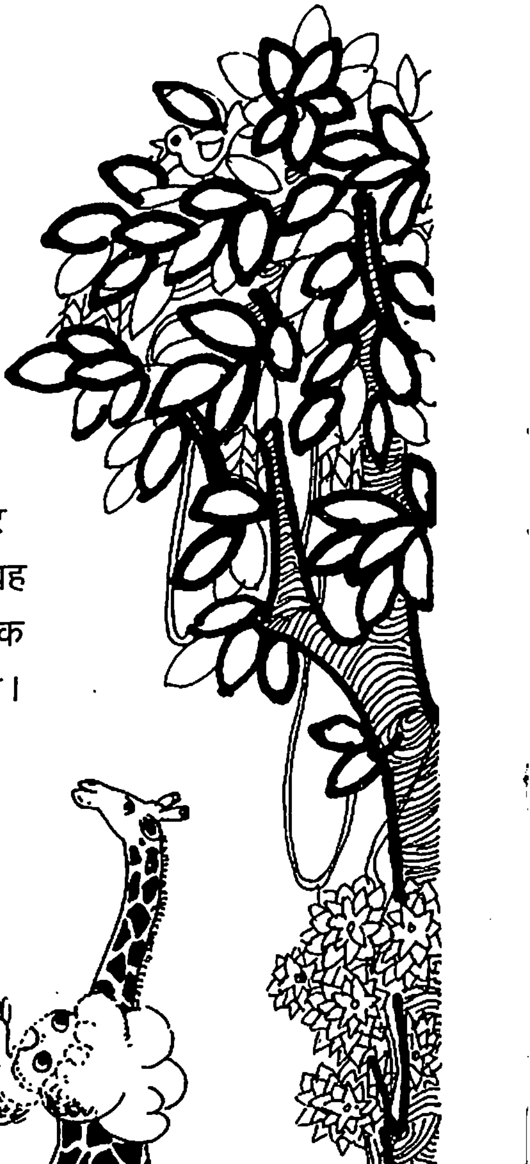

वह एक लम्बा जिराफ था, आम जिराफ से बहुत लम्बा। नाम था लम्बू। उसे सपाट मैदानों में दौड़ने में बड़ा मज़ा आता। उसे बिल्कुल ऐसा लगता मानो उसका सिर बादलों में घुस गया है। और एक दिन ऐसा हो भी गया – वो भाग रहा था... भाग रहा था कि अचानक उसे लगा कि उसका सिर एक बादल में घुस गया है। और अब वह कुछ नहीं देख सकता कि वह जा कहाँ रहा है। लम्बू रुका। यह सब इतना अचानक हुआ कि ज़मीन पर उसके पाँवों के निशान अचानक ब्रेक लगी तेज़ रफ़्तार गाड़ी के टायरों के निशान सरीखे घिसट गए। उसने चारों ओर देखा। उसका सिर एक बादल के भीतर था – एक नीले-सफेद बादल में।

लम्बू ने बादल से पूछा, ''क्यों बंधु! तुम आसमान से इतनी दूर क्या कर रहे हो?''

बादल रुआँसा हो गया, ''मैं आसमान से गिर पड़ा हूँ, मुझे अकेला नहीं घूमना था, मम्मी-पापा की सुनी-अनसुनी कर चला आया और देखो... अब क्या करूँ... ऊँ...ऊँ....।''

लम्बू को बादल पर बड़ा तरस आया। उसने कहा, ''देखो ऐसा करो तुम मेरी गर्दन पर बैठ जाओ, जब तक कि मैं तुम्हें वापस ऊपर भेजने का कोई आइडिया सोचता हूँ।

फिर क्या था वो नीला-सा सफेद-सा बादल लम्बू की गर्दन पर जा बैठा। और लम्बू ने दौड़ लगा दी जंगल की ओर।

जंगल किनारे पहुँच लम्बू ने आवाज़ लगाई अपनी बंदर दोस्त कामांगी के लिए।

कामांगी एक शाख से दूसरी पर झूलती-झूलती जंगल से निकली और एक पेड़ पर टिक गई।

''अरे लम्बू ये तेरी गर्दन पर क्या लिपटा है?'' लम्बू की गर्दन पर नीले-सफेद खूबसूरत बादल को देख वो हैरान थी।

''कामांगी मिलो इससे.. यह है बादल-बच्चा। यह आसमान से गिर पड़ा है। अब वापस कैसे जाए यह नहीं जानता। हमें कोई जुगत लगानी होगी कि यह वापस अपने माँ-बाप के पास पहुँच जाए।''

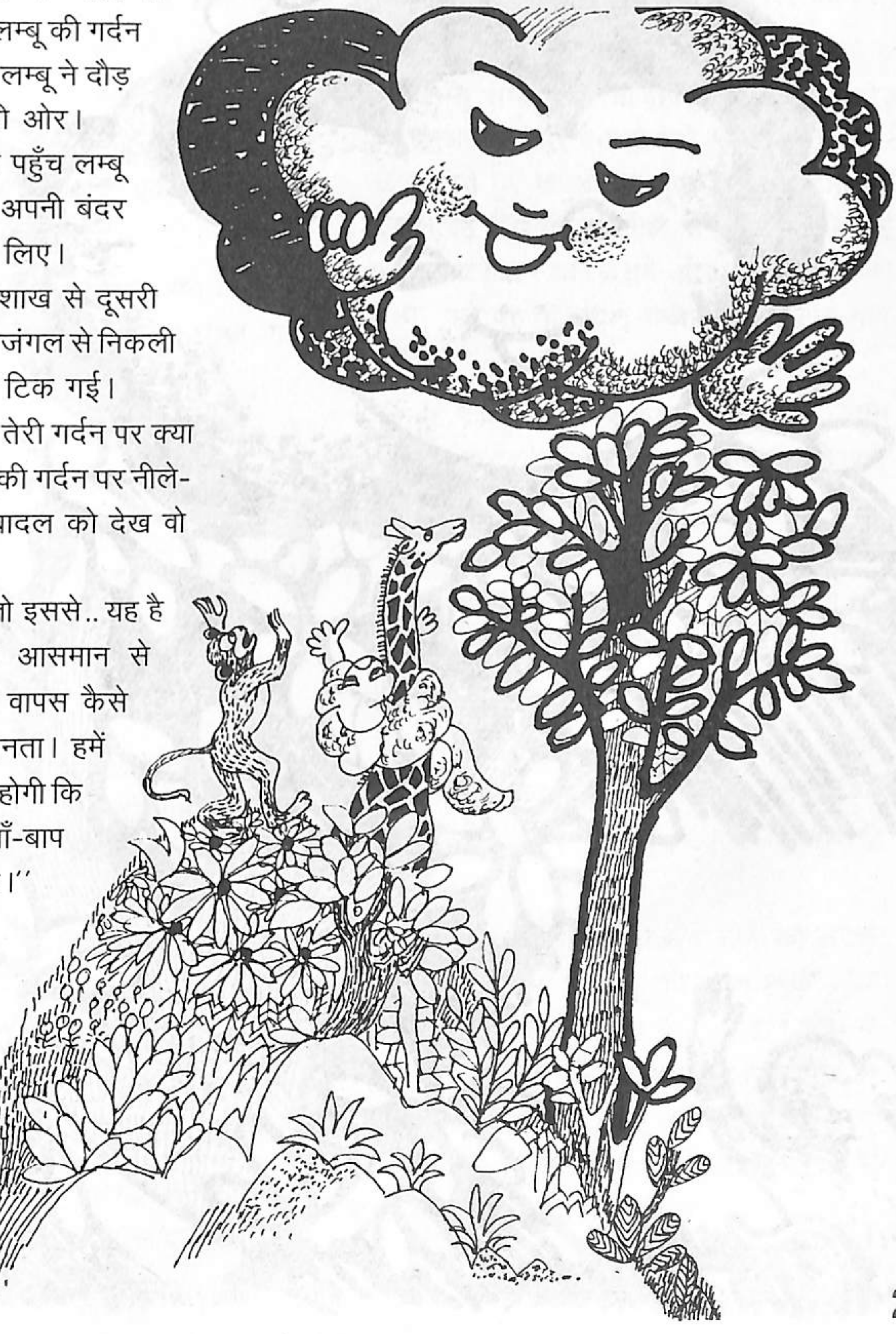

बादल-बच्चा बुदबुदाया, ''नमस्ते।''

''लम्बू यह बादल-बच्चा तुम्हारी गर्दन पर लिपटा यूँ लग रहा है जैसे तुमने कोई नीली-सफेद टाई पहन रखी है। बहुत स्मार्ट लग रहे हो! देखो....देखो तुम्हीं देखो खुद को इस शीशे में।'' एक पेड़ की कोटर से आइना निकालते हुए कामांगी बोली।

कामांगी जानती थी कि एक भालू ने उस आइने को वहाँ छुपा रखा है।

''ओह कामांगी ज़्यादा मस्ती मत करो। बस कोई तरीका सोचो कि यह बादल-बच्चा वापस हँसी-खुशी घर पहुँच जाए।''

कामांगी ने जल्दी से आइना वापस रखा और सोचने लगी।

''मिल गया''... कामांगी ज़ोर से चीखी और लगी झूलने ये शाख... वो शाख... लम्बू आओ मेरे पीछे। लम्बू गर्दन पर नीला-सफेद बादल लटकाए भाग चला कामांगी के संग-संग। जल्द ही वो जंगल पीछे छोड़ आए।

एक विशाल पहाड़ के निचले सिरे के करीब कामांगी पहाड़ पर चढ़ने लगी बेतहाशा। एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदते-फाँदते। लम्बू और बादल के लिए यह कुछ मुश्किल काम था। अंततः वे पहाड़ के ऊपरी सिरे पर जा पहुँचे।

लम्बू अपनी उखड़ी साँस को सम्हाल ही रहा था कि उसने देखा कि कामांगी पागलों की तरह आकाश की तरफ हाथ हिला-हिलाकर इशारे कर रही है। लम्बू ने देखा ऊपर तो कोई नहीं है।

''तुम पागल तो नहीं हो गई कामांगी? तुम किसे बुला रही हो?'' लम्बू चिल्लाया।

उसने हाथ हिलाना बन्द नहीं किया। बल्कि चिल्लाई, ''मैं उस बड़े मोटे काले बादल को बुला रही हूँ। तुम भी कुछ करो कि उसका ध्यान इस तरफ हो। हम उससे कहेंगे कि वो इस नीले-सफेद बादल को अपनी पीठ पर बैठाकर वापस अपने घर पहुँचा दे।''

लम्बू समझ गया। वो पहाड़ी पर लगे लम्बे पेड़ को हिलाने लगा पूरे दम-खम से। बड़े बादल ने वहाँ से गुज़रते हुए पहाड़ी पर कुछ हलचल होते हुए देखी। वह जिराफ को नीले-सफेद रंग की टाई पहने देख हैरान था। उसने और ज़्यादा ध्यान से देखा, 'अरे यह तो बादल-बच्चा है' कोई टाई-वाई नहीं।

वह पहाड़ के ऊपर रुका और चीखा, ''तुम वहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया?''

''मैं आसमान से टपका हूँ, और ये दोनों मुझे तब से लिए-लिए घूम रहे हैं। यह कामांगी का आइडिया था तुम्हें बुलाने का। ये मेरे दोस्त हैं। क्या तुम मुझे वापस आसमान तक ले जा सकते हो?''

''बादल भैया अगर तुम ज़रा नीचे सरक आओ तो यह बादल-बच्चा उचककर तुम पर बैठ जाएगा। और अपने घर पहुँच जाएगा।'' कामांगी बोली।

बड़े बादल ने हामी भरी और नीचे को सरक आया। बादल-बच्चे ने लम्बू की गर्दन छोड़ी और बड़े बादल की पीठ पर जा बैठा। बादल-बच्चे ने लम्बू और कामांगी को शुक्रिया कहा और फिर से मिलने का वादा किया। लम्बू और कामांगी ने हाथ हिलाया और आकाश में तब तक देखते रहे जब तक वो बादल-बच्चा दिखता रहा।

चित्र : शोभा घारे
अंग्रेज़ी से अनुवाद : शशि सबलोक

चकमक समाचार

सम्भावना ट्रस्ट का वार्षिक कार्यक्रम

सत्ताइस अक्टूबर, 2002

सम्भावना ट्रस्ट एक स्वैच्छिक संगठन है जो भोपाल के गैस पीड़ितों के हित में काम करता है। वह गैस पीड़ित इलाके में एक क्लीनिक चलाकर गैस पीड़ितों का इलाज कराता है तथा स्वास्थ्य शिक्षण और सामुदायिक कार्य भी करता है।

3 दिसम्बर, 1984 में कार्बाइड कारखाने से रिसी गैसें क्या थीं और मानव शरीर पर उनका क्या प्रभाव पड़ा है, यह अभी तक किसी को ठीक से समझ नहीं आया। इससे शरीर के सारे तंत्र प्रभावित हुए हैं।

गैस का कहाँ-कहाँ पड़ा है प्रभाव

लोगों को साँस लेने में तकलीफ होती है। क्योंकि उनके फेफड़े खराब हो गए हैं। इस कारण कई गैस पीड़ित बस्तियों में टी.बी. की बीमारी फैल गई है। साँस फूलने के कारण लोग कमज़ोरी महसूस करते हैं और काम करने में मुश्किल आती है जिसके कारण उनकी रोज़ी-रोटी की समस्या पैदा होती है। इसके अलावा जोड़ों में दर्द, आँखों की बीमारियों की शिकायतें भी बढ़ी हैं।

उस भयानक रात की याद अभी भी लोगों के दिलोदिमाग पर बनी है। इस कारण कई लोग मस्तिष्क की बीमारियों से भी पीड़ित हैं। लेकिन सबसे ज़्यादा असर महिलाओं और बच्चों पर पड़ा है। बच्चों की शारीरिक वृद्धि शहर की दूसरी आबादी की तुलना में ठीक से नहीं हो रही है। सबसे ज़्यादा चिंता की बात तो यह है कि गैस निकलने के बाद पैदा हुए बच्चों में गैस का जो प्रभाव दिखाई दे रहा है, वह गैस के कारण होने वाला अनुवांशिक असर हो सकता है। गैस पीड़ितों में केंसर के मरीजों की संख्या सामान्य से अधिक पाई गई है।

सरकार द्वारा गैस से होने वाली बीमारियों के बारे में जो शोध कार्य कराए जा रहे थे, उन्हें दस साल पहले ही बंद करवा दिया गया। कार्बाइड ने भी कारखाने से रिसी गैसों और इलाज के सम्बंध में कोई जानकारी नहीं दी। अभी भी सही इलाज की कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

इसीलिए सम्भावना ट्रस्ट का काम बहुत महत्व रखता है। यहाँ अंग्रेज़ी दवाइयों के साथ आयुर्वेदिक तथा योग से भी इलाज किया जाता है। इससे न केवल नया रास्ता ढूँढा जा सकता है बल्कि अपने देश की परम्परागत चिकित्सा पद्धति को फिर से काम में लाने पर ज़ोर भी दिया जा सकता है।

इसी सम्भावना ट्रस्ट की छठवीं वर्षगाँठ मनाई गई अक्टूबर की 27 तारीख को। इसमें एक प्रदर्शनी और कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

प्रदर्शनी में गैस से प्रभावित हुए मानव शरीर के अंगों के मॉडल रखे गए थे। इसके अलावा पोस्टर और मॉडल के द्वारा गैस से होने वाले प्रभावों की जानकारी दी गई। गैस के प्रभाव से यहाँ का पानी भी प्रदूषित हुआ है। इन प्रभावित इलाकों के लोग यही प्रदूषित पानी पीते हैं। और इस वजह से बीमारियाँ बढ़ती ही हैं। इस बारे में भी प्रदर्शनी में जानकारी दी गई।

प्रदर्शनी देखने बहुत सारे बच्चे और बड़े लोग आए। वैसे बच्चों की भीड़ खेलों वाले स्टॉल पर सबसे ज़्यादा थी। एक खेल था जहाँ टिन के डिब्बों से बनाए पहाड़ को गेंद से गिराना था। टिन के डिब्बों पर अलग-अलग बातें लिखी थीं जैसे – कचरे का ढेर, इलाज का खर्च, गैर ज़िम्मेदार चिकित्सा, अस्पतालों में बढ़ती लापरवाही, भ्रष्टाचार। इनमें भी सबसे ज़्यादा लाइन उस खेल के बाहर लगी थी जिसमें वारन एंडरसन (गैस रिसन के समय कार्बाइड कम्पनी का मुख्य अधिकारी) को डंडा मारना था। जब भी किसी बच्चे का निशाना सही लग जाता, एंडरसन का पुतला झाड़ू हाथ में पकड़े बस्ती की महिला के एक पुतले का पाँव छूता था! इस खेल में बच्चों को खूब मज़ा आ रहा था।

बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता भी रखी गई थी। अधिकांश बच्चों ने गैस रिसन की रात का चित्र बनाया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का मुख्य भाग था एक फैशन शो। यह फैशन शो आम फैशन शो की तरह नहीं था बल्कि इसमें गैस कांड की घटनाओं से जुड़े पात्रों को दिखाया गया। जैसे गैस पीड़ित महिला जिसके पर्स में छेद है और पर्स खाली है। और कार्बाइड कम्पनी के अधिकारी दाँत दिखाते हुए। सबको नमस्ते करते हुए नेता। फिर वॉरेन एंडरसन सिगार और दारू पीते हुए। इस तरह गैस कांड के बाद हुई आम लोगों की बदहाली और लाचारी तथा घटना के ज़िम्मेदार लोगों की बेइमानी और भ्रष्टाचार को दिखाने की कोशिश की गई। अंत में एक कव्वाली का आयोजन भी किया गया।

रपट: रैक्स डी. रोज़ारियो

चित्रकारी करते बच्चे

खेल समाचार

क्रिकेट : वेस्ट इंडीज़ की क्रिकेट टीम इन दिनों भारत दौरे पर है। अभी तक दो टेस्ट मैच खेले जा चुके हैं। दोनों ही टेस्ट मैच जीतकर भारतीय टीम ने तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला जीत ली है।

क्रिकेट में इस महीने एक उठापटक हुई है। पाकिस्तान की टीम ऑस्ट्रेलिया से बुरी तरह हारी। अब तक की सबसे बड़ी इस शिकस्त में पाकिस्तान तीनों टेस्ट मैच पारी के अंतर से हारा। और तो और इनमें से एक मैच में तो टीम 58, 59 रन ही बना पाई।

एशियाई खेल : बुसान एशियाई खेलों का समापन समारोह हुआ। चीन ने इस बार सबसे ज़्यादा पदक जीते। दूसरे नम्बर पर दक्षिण कोरिया और तीसरे नम्बर पर जापान रहा।

भारत पदक तालिका में सातवें नम्बर पर था लेकिन सुनीता रानी के दो पदक छिन जाने के कारण आठवें नम्बर पर आ गया। भारत को 10 स्वर्ण, 12 रजत और 12 कांस्य पदक मिले। अगले एशियाई खेल दोहा की राजधानी कतर में 2006 में होंगे।

स्पेशल ओलम्पिक: स्पेशल ओलम्पिक की राष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ सात शहरों में हुईं। बैंगलोर में 1 से 4 अक्टूबर 2002 तक रोलर स्केटिंग प्रतियोगिता हुई। भोपाल के मिरियम स्कूल ने रोलर स्केटिंग में 10 स्वर्ण पदक जीते। मध्यप्रदेश ने पहली बार इस खेल में हिस्सा लिया था।

भारत में इन खेलों को 'स्पेशल ओलम्पिक इण्डिया' नाम की संस्था करवाती है। यह संस्था 1988 में बनी। इस बार लगभग पच्चीस हज़ार बच्चों ने इन खेलों में भाग लिया। स्केटिंग के अलावा बास्केट बॉल, फ्लोर हॉकी और सौ मीटर की दूरी तक चलने वाली प्रतियोगिताएँ शामिल थीं। इन मुकाबलों में कुछ एथलीटों का चुनाव होगा जो अगले साल आयरलैण्ड की राजधानी डबलिन में होने वाले स्पेशल ओलम्पिक में भाग लेने जाएँगे।

भोपाल के मिरियम स्कूल के बच्चे रोलर स्केटिंग में भाग लेते हुए

चेहरे की मज़ेदार कसरत

तुमने कभी अपना चेहरा तब देखा है जब तुम्हें किसी पर गुस्सा आ रहा होता है। या जब तुम ज़ोर से हँस रहे होते हो। हर भाव के साथ चेहरा बदलता है। इसमें साथ देती हैं हमारे चेहरे की माँसपेशियाँ। जब हम किसी से बात करते हैं या जब हम हँसते हैं, मुस्कुराते हैं, रोते हैं, चिल्लाते हैं तो हमारी माँसपेशियों की कसरत भी हो रही होती है। वैसे तो सभी हँसना, रोना, गाना आदि करते हैं। लेकिन इन्हें कसरत के रूप में करते रहना चाहिए। कसरत की कसरत और मज़ा भी।

माथे की त्वचा को ऊपर की ओर खींचो।

खोपड़ी की चमड़ी को नीचे की ओर खींचो।

कानों को पीछे की ओर ले जाओ।

कानों को ऊपर की ओर ले जाओ।

मुँह को पूरा खोलो।

एक आँख बंद करो, दूसरी खुली रखो। फिर दूसरी बंद करके पहली खोलो।

नथुने सिकोड़ लो।

नथुने फुलाओ।

पहले त्यौरियाँ चढ़ाओ। फिर बड़ी सी मुस्कुराहट बिखेर दो।

ऊपरी होंठ को नीचे की ओर ले जाओ।

अपने चेहरे को विभिन्न मुद्राओं में बना-बनाकर देखो। इससे तुम्हारी कौन-कौनसी माँसपेशियाँ हिलती हैं यहाँ इस चित्र में देखो।

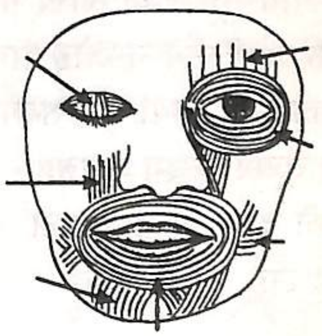

क्या होता है दंगा?

गोलू पूछ रहा भोलू से
समझा भोलू
दंगा करने करवाने का
मतलब क्या है?
क्या यह कोई
छिपा हुआ दानव है भाई,
जो लोगों के आगे-पीछे घूम रहा है?
जिसके डर से लोग भागते
जिसके डर से रात-रातभर लोग जागते
जिसके डर से लोग घरों के अंदर रहते
जिसके डर से लोग न हैं सच को सच कहते
जिसके डर से खाली हो जाती सड़कें
जिसके डर से एक-दूसरे से मिलने पर छिड़कें
जिसके डर से शहर गाँव कस्बे घर आँगन थर्राते हैं
जिसके डर से मेलजोल के मीठे स्वर भर्राते हैं
बतला भोलू –
क्या होता है दंगा?
इसका चेहरा कैसा होता है?
क्या खाता यह, कैसे चलता है?
कैसे हँसता, रोता गाता
बतला भोलू???
भोलू बोला –
क्या बतलाऊँ तुमको गोलू
इसका कोई सिर न सिरा है
हाथ-पाँव मुँह नाक आँख गायब हैं इसके
इसके कोई सगे न कोई सम्बंधी हैं
मारकाट के सिवा न इसको
शब्द दूसरा सूझा करता
इसकी दाढ़ों में तो केवल
स्वाद लहू का ही रहता

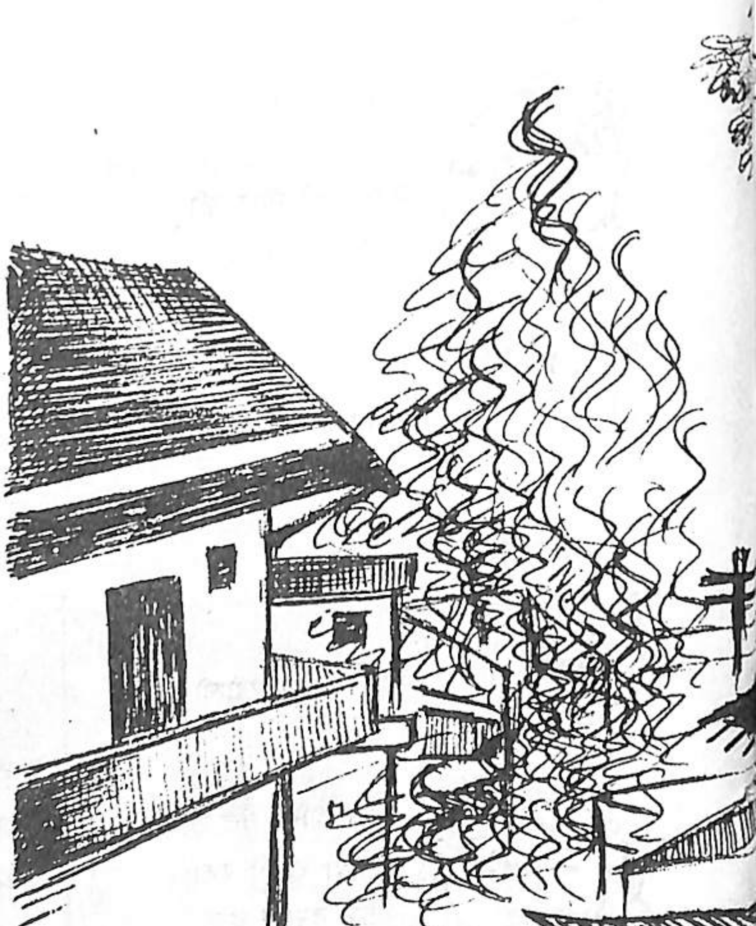

यह न जानता क्या सुंदर है क्या कुरूप
यह न जानता क्या है छाया क्या है धूप
इसे न जीवन की सच्चाई का आभास
इसे न आती मानवता की बातें रास
भाईचारा दया प्रेम करुणा अखलाक
इसे न आती शांति अहिंसा सदाचार की बात
पता न चल पाता है इसके छिपे राज़ का
मारकाट कर खून खराबे पर हँसता है
बुरा न कर पाता है जिस दिन
उस दिन ही रोता है
इसे बहुत अच्छी लगती है
जली हुई बस्ती
इसे न भाता औरत का सम्मान
और बच्चों की मस्ती
यह इतना विकराल भाव कि इसके बल पर
भाईचारा पनप न पाता भूतल पर
ऐसा है तो सुन लो भोलू
हम दोनों ही मिलकर कुछ करें यहाँ
सोचो, हम क्या कर सकते हैं?
प्यार सभी से कर सकते हैं।
प्यार करें भाई प्यार करें।
हाँ! भाई गोलू प्यार करें।
हाँ! भाई भोलू प्यार करें।
प्यार करें भाई प्यार करें।
हिलमिलकर प्यार करें।
हम सब बच्चे प्यार करें।
सबसे मिलजुल प्यार करें।
प्यार करें भाई प्यार करें।

● प्रेम शंकर रघुवंशी
● चित्र : मनोज कुलकर्णी

पुस्तक चर्चा

भालू का बच्चा

फर्ज़ करो तुम किसी पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहे हो ! और फिर इसी कोशिश में तुम गिर जाते हो .... तुम क्या करोगे? शायद फिर से चढ़ने की कोशिश करोगे या शायद रूठ जाओगे! इस किताब के भालू के बच्चे के साथ भी ऐसा ही कुछ होता है। पेड़ से गिरकर ये महाशय रोने लगते हैं। जब चिड़िया, गिलहरी, बंदर, तोता और मधुमक्खी को पता चलता है तो वे अपने-अपने तरीके से उसे मनाने की कोशिश करते हैं। कोई कुछ लाता है, कोई कुछ लाता है। बंदर क्या लेकर आया होगा? अच्छा और वो चुलबुली गिलहरी क्या लाई होगी और वो.....। अब तुम किताब तो पढ़ोगे ही!

इस किताब के चित्र जानदार हैं जिन्हें तुम बार-बार देखना चाहोगे। इसी वजह से इसका उपयोग कई तरीकों से हो सकता है। तुम चाहो तो इन चित्रों पर एक और मज़ेदार कहानी लिख सकते हो।

बेशक यह एक बेजोड़ किताब है, पर कुछ छोटी छोटी चूकें भी हैं जिन्हें नज़रंदाज़ भी किया जा सकता है .... मसलन पात्रों की कुछ चीज़ें पन्ना बदलते बदल जाती हैं। कभी तोते के गले में लाल कंठी होती है तो कभी काली और कभी वो भी गायब हो जाती है। ऐसे ही ''चींटी ने एक सींक लगाकर दोना बनाया" **जबकि चित्र में** ''चींटी ने सींक लगाकर एक दोना बनाया''। लेकिन इन बातों के बावजूद किताब का मज़ा बरकरार रहता है।

किताब का नाम : भालू का बच्चा
लेखक : अमर गोस्वामी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त

नाव चली

एक खरगोश ने एक कागज़ की नाव बनाई और उसे जंगल के बीच बहने वाली नदी में छोड़ दिया। बस नदी में नाव चलती गई, उसे नए-नए साथी मिलते गए। यह कहानी अमर गोस्वामी ने लिखी है। बहुत छोटे बच्चे जो पढ़ नहीं सकते, उन्हें पढ़कर सुनाने के लिए यह किताब बढ़िया है क्योंकि इसमें कहानी के साथ-साथ चित्र देखकर बच्चों को बड़ा मजा आएगा।

कहानी ठीक है, आसान है, लेकिन इस किताब के चित्र बहुत सुन्दर हैं और रंगीन भी। इसलिए किताब बच्चों के लिए उपयोगी साबित होगी।

किताब का नाम : नाव चली
लेखक : अमर गोस्वामी
चित्रकार : पार्थ सेनगुप्त

चकमा

बहुत छोटे बच्चे अक्सर ही पशु-पक्षी या जानवरों को देखने, उनके बारे में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। यह किताब भी दो छोटे-छोटे कुत्ते के बच्चों पर लिखी गई है। दोनों कभी झगड़ते हैं, तो कभी दोस्ती कर लेते हैं।

कहानी जब आगे बढ़ती है, तो और भी मज़ेदार होती जाती है। इसमें एक पात्र और शामिल हो जाता है। यह अगला पात्र है गिलहरी जो बैठी-बैठी अखरोट तोड़ रही थी।

भोलू और गोलू आपस में लड़ते-झगड़ते किसी तरह उसके पास पहुँच जाते हैं। दोनों को अपनी ओर झपटते देख गिलहरी की क्या हालत हुई होगी, यह सब तुम किताब में पढ़ोगे तब जान पाओगे।

किताब में सिर्फ कहानी ही नहीं है, इसके चित्र भी मज़ेदार हैं।

किताब का नाम : चकमा
लेखक : रावेन्द्र कुमार रवि
चित्रकार : मालिनी शिवकुमार

ये किताबें नालंदा लखनऊ, राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र नई दिल्ली (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) तथा यूनीसेफ लखनऊ द्वारा आयोजित कार्यशाला में तैयार की गई हैं।

सोनाली का मित्र

यह छोटे बच्चों के लिए एक बहुत मज़ेदार कहानी की किताब है। बच्चे पशु-पक्षियों से प्यार करते हैं। उनको अपना बनाना चाहते हैं। उनके साथ खेलना, खाना-पीना उन्हें अच्छा लगता है। ऐसा ही चित्रण इस कहानी में है। सोनाली नाम की एक नन्ही लड़की एक कौवे को अपना दोस्त बनाना चाहती है। लेकिन कौवा उसके हाथ से बिस्कुट का टुकड़ा छीन लेता है। सोनाली रोने लगती है। आगे क्या होता है, यह तुम किताब में पढ़ना। इस किताब के चित्र बहुत सुन्दर हैं।

किताब का नाम : सोनाली का मित्र
लेखक : अलका शंकर
चित्रकार : जगदीश जोशी
प्रकाशक : चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट
मूल्य : 5.00 रुपए

चित्र-पहेली

■	■	1			2		■	3
4			■	■		■	5	
	■	■	6	■	7	8	■	
9	10	■	11		■	12	13	
■		■		■	14	■		■
15		16	■	17		■	18	19
	■	20	21	■		■	■	
22		■		■	■	23		
	■	24					■	■

9.

11.

12.

15.

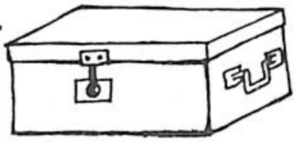

17.

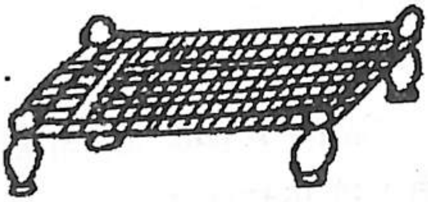

संकेत : बाएँ से दाएँ

1.

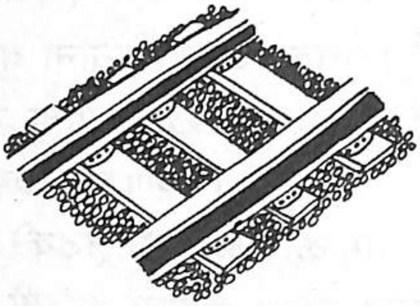

4.

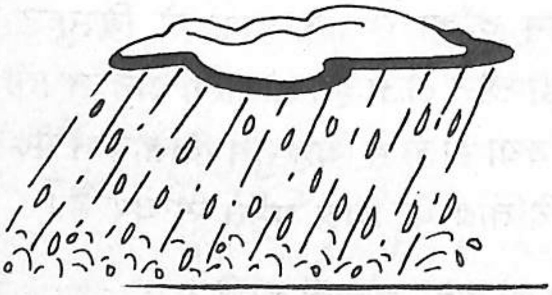

5.

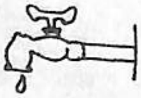

7. करेला और ... चढ़ा (2)

18. लाली चीन गई में एक फल है (2)

20.

22.

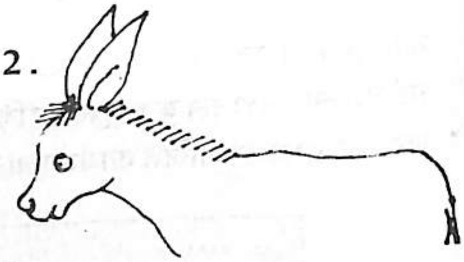

23.

24.

संकेत : ऊपर से नीचे

1. ____________________

2.

3. जहाँ 15 अगस्त के दिन प्रधानमंत्री झंडा फहराते हैं। (4)

4.

6. 'अ' से 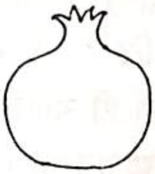

8.

10. पानी में कूदने पर होने वाली आवाज़ (3)

13.

14.

15. 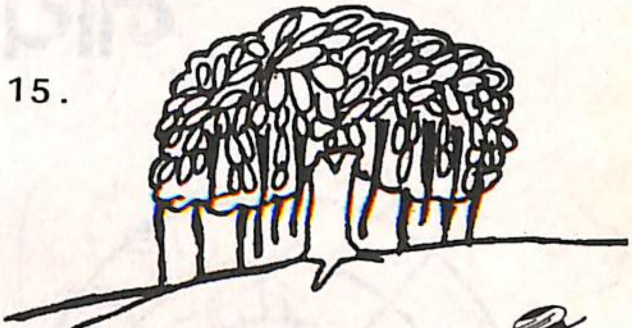

16. 4+3=?

19.

21. हवा नहीं में गाड़ी (3)

23.

चित्र : आशीष नगरकर एवं विप्लव शशि

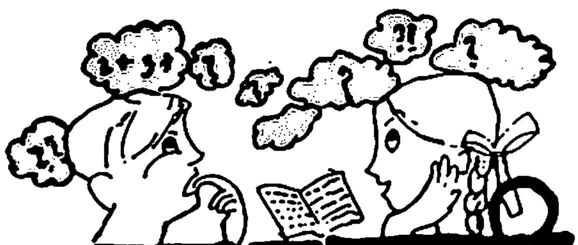

माथापच्ची

❶

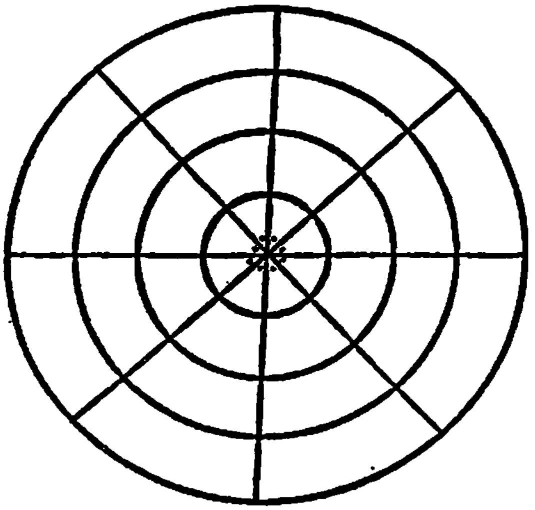

इस चित्र को देखो! इसमें एक के अंदर एक 4 घेरे हैं। ये चारों घेरे 8 खड़ी लाइनों से 8 टुकड़ों में बँटे हैं। सबसे छोटे घेरे में 8 बिन्दु पड़े हैं। तुम्हें इन 8 बिन्दुओं को इस तरह जमाना है कि हर घेरे में भी 2 बिन्दु आएँ और आमने-सामने वाले हर शंकूनुमा भाग की जोड़ी में भी 2 बिन्दु रहें।

❷

$$\frac{148}{* * *} + \frac{35}{70} = 1$$

इस समीकरण के तीन अंक घूमने गए हैं। शायद वे न जाते अगर उन्हें मालूम होता कि उनके न रहने से यह समीकरण ही गलत हो जाएगा। खैर चलो जब तक वे लौटें तब तक हम कुछ माथापच्ची ही कर लें।

तो तुम्हें दो चीज़ें पता करनी हैं – एक तो वे तीन अंक कौन से हैं? और दूसरी इस समीकरण को सही करने के लिए उन्हें किस क्रम में आना पड़ेगा?

❸

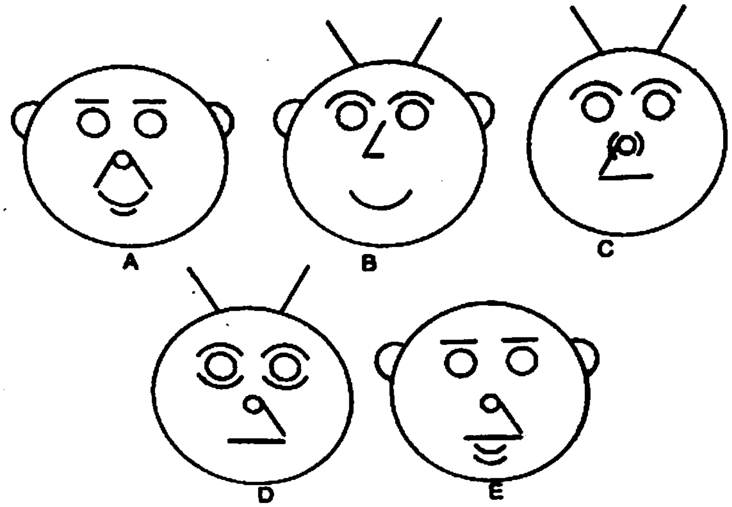

इन पाँच चेहरों को गौर से देखो। इनमें एक चेहरा बाकी चार से अलग है। बस तुम्हें उसी चेहरे को ढूँढना है और साथ ही ये भी बताना है कि वो कौन-सा पहलू है जिससे वह अलग हो जाता है?

④

पनप, कसक, मरम, तलत अनगिनत शब्द होंगे ऐसे! इनकी दो खासियतें हैं – एक तो ये सब तीन अक्षरों से बने हैं। दूसरे, इनका पहला अक्षर वही है जो इनका तीसरा यानी आखिरी अक्षर है। क्या तुम इसी मिज़ाज के पाँच और शब्द ढूँढ सकते हो?

⑥

$$99 + \frac{9}{9} = 100$$

इसी तरह क्या तुम 4 का चार बार इस्तेमाल करके उसे 6 के बराबर कर सकते हो?

⑦

क्या वक्त हो रहा है इस घड़ी में? बिल्कुल ठीक 2 बजकर 50 मिनट और 6 सेकेण्ड। रोशन इसी समय अपने घर से निकला।स्टेशन तक पहुँचने में उसे साढ़े तीन घण्टे लगे। वहाँ पहुँचकर उसने अपनी घड़ी देखी।

क्या तुम बता सकते हो तब इस घड़ी में कितने बज रहे होंगे? हाँ लेकिन यह भी ध्यान रखना कि रोशन की घड़ी चार सेकेण्ड प्रति घण्टे के हिसाब से धीमी चलती है।

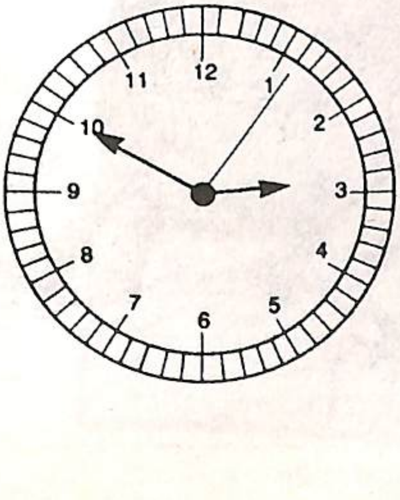

⑤

नीचे दिखाए दोनों चित्रों में कुछ अन्तर हैं, ढूँढो।

चित्र : धर्मपाल डोगरा 'मिन्टू'

चित्र देखो – कहानी लिखो

तुम यहाँ दो चित्र देख रहे हो। इन्हें देखकर एक कहानी बना सकते हो? वैसे ये एक कहानी के ही चित्र हैं। लेकिन वह कहानी हम तब ही छापेंगे जब तुम्हारी लिखी कहानियाँ हमें मिल जाएँगी। उनमें से चुनकर कुछ कहानियाँ और साथ में यह मूल कहानी एक साथ छापेंगे। तो जल्दी से सोचना शुरू करो।

तुम अपनी कहानी
15 दिसम्बर, 2002
तक भेज सकते हो।
कहानी भेजते समय लिफाफे या पोस्टकार्ड पर 'चित्र देखो कहानी लिखो' ज़रूर लिखना।

राजेश कुमार आटोदिया, खातेगाँव, देवास, म.प्र.

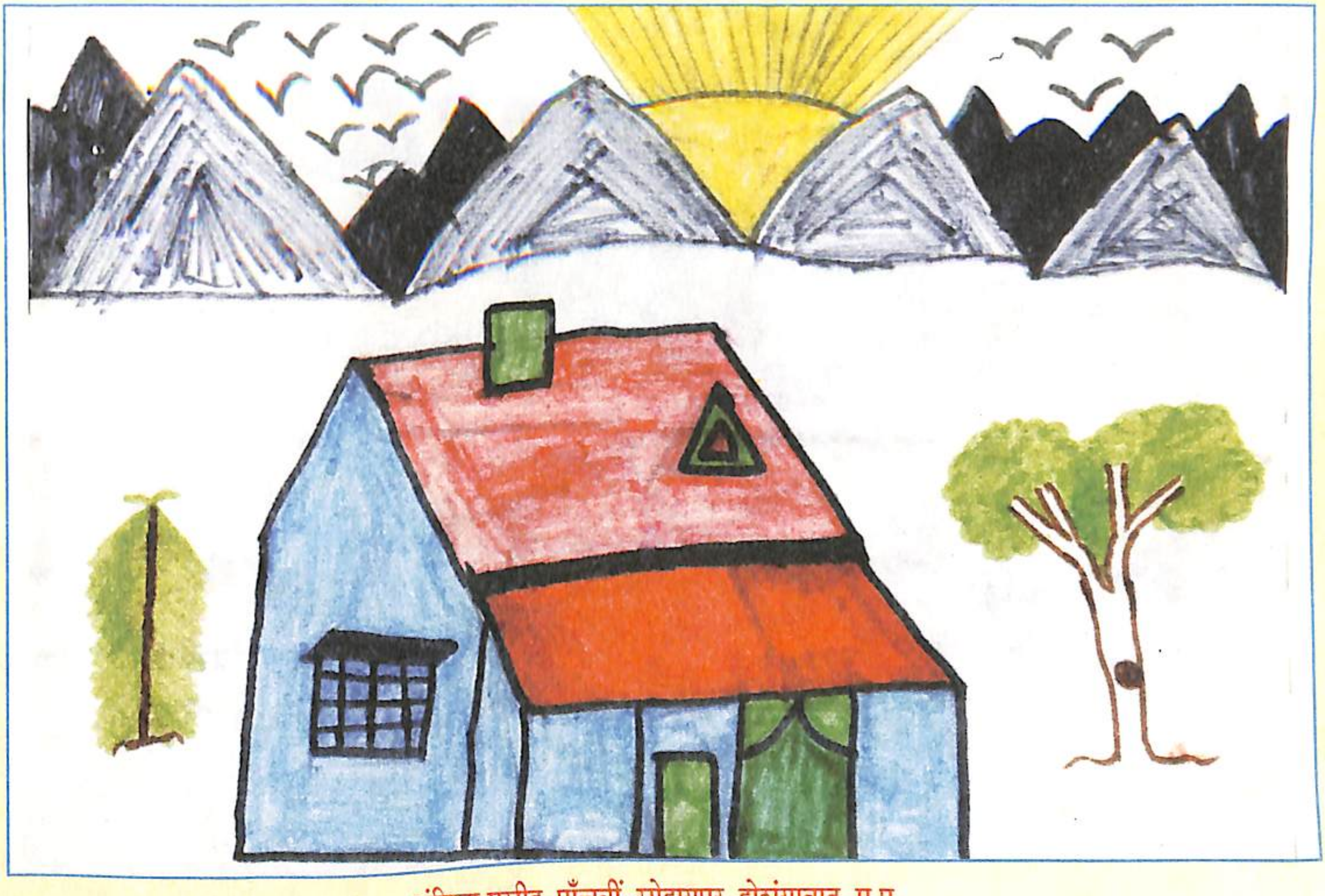
अंकिता मसीह, पाँचवीं, सोहागपुर, होशंगाबाद, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2002

नीलिमा सिंह राठौर, छठवीं, भोपाल, म.प्र.